RNI No. : UPHIN/2017/74695

डाक पंजीकरण सं. :
एस.एस.पी./एल.डब्लू./एन.पी. - 558/2018-2020

स्टूडियो न्यूज

वर्ष : 3 अंक : 12 | लखनऊ, शनिवार, 6 जून 2020 से 5 जुलाई 2020 | पृष्ठ : 16 | मूल्य : 10 रूपये

स्टूडियो न्यूज .... सफलता के 3 वर्ष

स्टूडियो न्यूज अपने सभी सम्मानित एवं अपनी-अपनी विधाओं के विशेषज्ञ सदस्यों का हार्दिक अभिनन्दन करता है, जिन्होंने समय-समय पर अपने अथक प्रयासों एवं मार्गदर्शन द्वारा स्टूडियो न्यूज को एक आकार देने एवं इस आयाम तक पहुँचाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। ढेर सारी शुभकानाओं के साथ ..... आभार !

अनिल कुमार सिंह

शशि भाल सिंह

सूरज बिष्ट

सौमित्र शंकर

साशा

तपेन्द्र दत्ता

अनिल रिसाल सिंह

मुकेश श्रीवास्तव

राजेन्द्र प्रसाद

आर. प्रसन्ना

त्रिलोचल कालरा

आनन्द कृष्ण लाल

अतुल हुंडू

विकास बाबू

स्मिता श्रीवास्तव

साहिल सिद्दीकी

गौतम बरूआ

नितिन मिश्रा

हिन्दी मासिक समाचार पत्र

स्टूडियो न्यूज

फोटो देखिए ही नहीं पढ़िए भी

सम्पादक की कलम से ...

मेरे फोटोग्राफर साथियो,

साथियो स्टूडियो न्यूज़ के जून 2020 अंक के साथ हम आपके समक्ष है। आशा है कि आप सब लोग स्वस्थ होंगे। ये स्टूडियो न्यूज़ का 36वाँ अंक है, ये अंक इसलिए भी मायने रखता है कि स्टूडियो न्यूज़ ने आप सभी लोगों के सहयोग से अपने 3 वर्ष पूरे कर लिए हैं। स्टूडियो न्यूज़ की पूरी टीम आप सभी साथियों का धन्यवाद् करती है जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमारा साथ दिया। लॉक डाउन के समय में भी विषम परिस्थितो में स्टूडियो न्यूज़ की टीम ने कार्य करते हुए अपने एडिशन को समय पर निकाला, ये यात्रा आप सभी लोगो के सहयोग एवं साथ के बिना संभव नहीं थी। अभी हम सब लोगों को साथ में लम्बी यात्रा करनी है, जिससे हम अपने फोटोग्राफी परिवार को तकनीकी तथा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बना सके।

करोना ने सभी का जीवन अस्त-व्यस्त कर दिया है परन्तु जिस प्रकार हर सिक्के के दो पहलू होते है उसी प्रकार करोना ने भागती हुई जिन्दगी में लगाम लगा कर हर व्यक्ति को सोचने के लिए समय दिया है कि उसको करना क्या है। जैसे फोटोग्राफी में फोटो खींचने के नियम है उसी प्रकार जिन्दगी को जीने के नियम है अगर वो नियम नहीं मानोगे तो प्रकृति आपको वो नियम जबरदस्ती पालन करवाएगी। ये समय अपने और अपने परिवार का ख्याल रखने का है, कार्य कीजिये लेकिन दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए, जिससे आप स्वस्थ रहें। आगे आना वाला समय फोटोग्राफी व्यवसाय के लिए अच्छा होगा ऐसा हमारा मानना है।

नवंबर-दिसंबर से वेडिंग का कार्य प्रारंभ होने की उम्मीद है। केवल ये ख्याल रखने की आवश्यकता है कि हम अपने खर्चों को सीमित करें। केवल कुछ समय लगा कर और मेहनत करके हम दोबारा अपनी मंज़िल की ओर अग्रसर हो सकते हैं। हमको केवल अपने कार्य में फोकस होना पड़ेगा तथा हर फोटोग्राफर साथी को मल्टी टास्कर बनना पड़ेगा जिससे वो अधिक से अधिक कार्य स्वयं कर सके और बदलते समय के हिसाब से कार्य कर सके।

हर रात के बाद नया सवेरा आता है इसी प्रकार ये कष्टपूर्ण समय भी कट जायेगा और एक नया सवेरा आएगा और हम लोग पहले से भी अधिक उत्साह से कार्य कर सकेंगे ऐसी हम आशा करते है। आप लोग सदा खुश रहे एवं स्वस्थ रहें। शेष अगले अंक में।

सुरेंदर सिंह बिष्ट
सम्पादक

फोटोग्राफरों पर करोना प्रभाव
(संकट एवं समाधान की दृष्टि से)

करोना महामारी के चलते पूरा विश्व विभिन्न प्रकार की समस्याओं से जूझ रहा है। हर जगह रोजगार खत्म हो रहे हैं। आर्थिक गतिविधियों पर ग्रहण लगा हुआ है। अन्य व्यवसायों की तरह फोटोग्राफी व्यवसाय भी इसकी चपेट में है। फोटो गुड्स, फोटोग्राफर तथा फोटो लैब्स सभी अपने को बचाने में संघर्ष में लगे हैं।

जिस तरह बाढ़ के खत्म होने के बाद भूमि और अधिक उपजाऊ हो जाती है उसी प्रकार हर बुरा समय अपने साथ एक अवसर भी लाता है, अगर हम सभी उन अवसरों की पहचान कर लें और उनका उपयोग सही तरीके से करें तो निःसन्देह हमें आगे बढ़ने में सहूलियत होगी। आइये अब फोटोग्राफी को इस लॉक डाउन में कौन-कौन से अवसर मिले उसको समझने की कोशिश करते हैं।

सबसे पहला अवसर हमें समय मिला जो कि पहले व्यवसाय में लगातार रहने के कारण नहीं मिल पाता था। तो इस अवसर का प्रयोग हम कैसे करें? बहुत सरल उपाय है हम सभी फोटोग्राफर खुद को और कुशल बनायें, विभिन्न प्रकार के एडिटिंग सॉफ्टवेयर को सीखें, कैमरे की बारीकियों को और समझने का प्रयास करें, उन तरीकों को खोजें की बिना महंगे उपकरणों के इस्तेमाल के कैसे मन मुताबिक परिणाम प्राप्त करें। बहुत से फोटोग्राफर अभी भी कम्प्यूटर के मामले में थोड़े कम जानकार हैं उनको कम्प्यूटर की जानकारी प्राप्त करना चाहिए। इस समय ऑनलाइन प्रोफाइल बनाना, फोटोग्राफी के लिए सोशल मीडिया का प्रयोग कैसे करना है आदि का भी ज्ञान ग्रहण करना चाहिए।

इस दौरान अपने ग्राहकों से लगातार संपर्क में रहना चाहिए, उनके विवाह के सालगिरह, बर्थडे आदि की शुभकामनाएं भेजना चाहिए क्योंकि लॉकडाउन के खत्म होने बाद यही लोग आपके लिए काम की संभावनाएं तलाशने में मददगार होंगे।

ये भी कहना गलत नहीं होगा कि बहुत से नौसिखिए फोटोग्राफर बाजार से खत्म हो जाएंगे जो कि इस व्यवसाय के भविष्य के लिए बहुत ही अच्छा है।

अर्थव्यवस्था के सुधार और लागों के जीवन को पटरी पर लाने के लिए हाल ही में सरकार ने 20 लाख करोड़ के पैकेज घोषित किया किन्तु फोटोग्राफी इंडस्ट्री के लिए कोई स्वतंत्र पैकेज की घोषणा नहीं हुई। जिसका एक मात्र कारण फोटोग्राफी व्यवसाय का असंगठित होना है। सभी फोटोग्राफर मित्रों को कहना चाहुँगा कि करोना काल में ये भी एक अवसर है। आज

डॉ. आत्मप्रकाश सिंह

सभी को समझना होगा कि इस व्यवसाय को नियम बद्ध और संगठित बनाना आवश्यक है। पूरे देश में एक ही संगठन के नीचे सारे फोटोग्राफर को खड़ा होना होगा। एक ही नेतृत्व में सभी को काम करना होगा। तभी कोई सरकार हमारी मदद कर पायेगी, हमारी भी आवाज सुनी जाएगी। इसके लिए सभी संगठनों को एक जुट ही कर संगठित होना होगा जो हमारे उज्ज्वल भविष्य का आधार बनेगा।

करोना काल के बाद लॉक डाउन खत्म होगा और फिर से जिंदगी की जद्दोजहद शुरू होगी। स्वाभाविक है कि बड़े आयोजन, शादियाँ, पार्टियाँ सब बहुत सीमित दायरे में होंगी और फोटोग्राफी के अवसर भी कम होंगे। ऐसे समय में फोटोग्राफर और उनके स्टूडियो को अपने लिए अनुकूल वातावरण बनाना होगा। बड़े-बड़े स्टूडियो अपने यहाँ विभिन्न प्रकार के फोटोग्राफी कौशलों का प्रशिक्षण देने का काम शुरू कर सकते हैं।

फोटोग्राफरों को प्री-वेडिंग, पोस्ट वेडिंग फोटोशूट करने का बढ़ावा देना होगा। मॉडलिंग पोर्टफोलियो, फैमिली मेंबर्स की ग्रुपिंग शूट आदि को आकर्षक पैकेज के साथ ऑफर करना होगा।

छोटे स्टूडियों में ऑनलाइन फॉर्म, मोबाइल रिचार्ज, बिल पेमेन्ट आदि की सुविधाएं उपलब्ध कराने की कोशिश होनी चाहिए, जिससे आमदनी के अन्य स्रोत बढ़ें।

फोटोग्राफर एक कलाकार होता है और एक कलाकार सदैव दूसरे कलाकार का सम्मान करता है। काम लेने की होड़ में कभी भी कलाकार को दूसरे कलाकार की निंदा नहीं करनी चाहिए और सदैव अपने काम से कैसे आप ग्राहकों को संतुष्ट करेंगे इसकी चर्चा करनी चाहिए।

फोटोग्राफरों को लॉक डाउन के बाद अनावश्यक और महंगे उपकरणों की खरीदारी से बचना चाहिए। जिनके पास पूर्व से आपकी आवश्यकता वाले उपकरण हों उनसे हायर करने या उनको कार्य का अवसर दे कर उनकी भी जरूरत को पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए।

जिस तरह ये संकट हम पर है ठीक उसी प्रकार हमारे कई ग्राहकों पर भी है। कल को जब लॉक डाउन खत्म होगा तो हमें अपनी तमाम परेशानी को देखते हुए उनकी भी दिक्कतों को समझना होगा। साथ ही अपनी और उनकी क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए अपने काम से सहनीय दर पर संतुष्ट करना होगा। ये सदैव ध्यान रखना चाहिए कि एक संतुष्ट ग्राहक आपके व्यापार को आगे बढ़ाने में जबरदस्त उत्साह भरता है।

लॉकडाउन के चलते और इस लॉकडान के बाद भी फोटोग्राफी इंडस्ट्री को खड़ा करना बेशक कठिन होने वाला है। ऐसे समय में आवश्यक है कि हम सभी सकारात्मक रहें और आने वाली चुनौती के लिए तैयार रहें। जीवन जीने के तरीके में बहुत से परिवर्तन हो रहे हैं। अतः फोटोग्राफरों को खुद की सुरक्षा के साथ ही साथ ग्राहक की सुरक्षा का भी पूरा ध्यान रखना है। अतः सभी को मास्क, सेनेटाइजर, ग्लब्स आदि के साथ ही काम करना सीखना होगा और ग्राहकों को भरोसा दिलाना होगा कि फोटोग्राफर या उनका स्टाफ उनके यहाँ काम करने में पूर्णतः तैयार और सुरक्षित है।

अंत में इतना ही कहना चाहुँगा कि सदैव सकारात्मक रहिये, लोगों से उम्मीद कम रखिये और खुद लोगों की उम्मीद बनिये। संसार का कोई भी संकट मनुष्य की इच्छा शक्ति से बड़ा नहीं। हमने पहले भी परिस्थितियों को अनुकूल बनाया है और आगे भी बनाएंगे।

डॉ. अजय पाठक की 'सफलता खोज लूंगा' कविता की पंक्तियों के साथ आप सभी को करोना से जीतने की शुभकामनाएं देता हूँ।

एक रचनाकार हूँ,
निर्माण करने में लगा हूँ।
मैं व्यथा का सोलहों-सिंगार करने में लगा हूँ।
यह कठिन है काम लेकिन,
श्रम अथक अविराम लेकिन।
इस थकन में ही सृजन की मैं सबलता खोज लूँगा।
मैं घने अवसाद में अपनी सफलता खोज लूँगा।

डॉ. आत्मप्रकाश सिंह
वाराणसी

रायबरेली फोटोग्राफी एसोसिएशन ने माननीय मुख्यमंत्री जी को उनके जन्मदिवस की बधाई विज्ञप्ति के माध्यम से दी और अपनी व्यथा व्यक्त करी। आर्थिक सहयोग की मांग रखी। कोरोना महामारी के कारण फोटोग्राफी का व्यवसाय से घर चलाना भी मुश्किल हो रहा है।

कैमरा कैसे सैनिटाइज करें?

साहिर सिद्दीकी
"साहिल"
कैमरा केयर

1. कैमरा सेनिटाइज़ करने से पहले आप हैंड ग्लब्स और फेस मास्क लगा लें। कैमरे लेंस अलग कर के कैमरे का बॉडी कैप कैमरे पर और लेंस का फ्रंट और रियर कैप लेंस पर लगा लें, फिर कैमरे से मेमोरी कार्ड, बैटरी भी निकाल लें।
2. कोलिन से आप अपने कैमरा एवं लेंस की बाहरी बॉडी को सेनिटाइज़ कर सकते हैं। हैंड सेनिटाइज़र का उपयोग ना करें ये कैमरे के लिए हानिकारक है।
3. उसके बाद आप साफ और सॉफ्ट टिश्यू पेपर पर हल्का सा कोलिन स्प्रे करें (याद रहे स्प्रे हल्का करें ज्यादा नहीं) कोलिन सूखने पर आप फिर से फ्रेश टिश्यू पेपर का इस्तेमाल करें।
4. कोलिन युक्त टिश्यू पेपर से आप कैमरे की पूरी बॉडी को हल्के हाथों से सेनिटाइज़ करें पर याद रखें जहाँ भी कैमरे के बटन्स हों और जहाँ भी कोई अक्षर बॉडी पर प्रिंट हो (जैसे कैमरे का ब्रांड एवं मॉडल का नाम, बटन्स या मोड डायल पर प्रिंटिंग) वहाँ पर बहुत ही सावधानी से और अत्यधिक हल्के हाथों से सेनिटाइज़ करें।
5. इसी तरह आप लेंस को भी सेनिटाइज़ करें पर सावधानी से और ध्यान रहे कि कोलिन युक्त टिश्यू से सिर्फ लेंस के बॉडी पार्ट को ही सेनिटाइज़ करना है लेंस के फ्रंट और बैक एलिमेंट को इससे क्लीन करने की कोशिश ना करें।
6. ऐसे ही आप कैमरे के मेमोरी कार्ड, बैटरी, कैमरा स्ट्रिप, कैमरा बॉडी कैप, लेंस फ्रंट कैप, लेंस रियर कैप को भी सेनिटाइज़ कर सकते है।
7. हमेशा कोलिन को टिश्यू पर ही हल्का सा स्प्रे करें और फिर टिश्यू से ही सेनिटाइज़ करें। कोलिन डायरेक्ट कैमरा या लेंस पर स्प्रे बिल्कुल भी ना करें।
8. सेनिटाइज़ करने के बाद आप अपना कैमरा 10-15 मिनट हल्की धूप में भी रख सकते हैं। ध्यान रहे कि वो जगह साफ हो।

स्टूडियो न्यूज

वर्ष : 3 अंक : 12 | लखनऊ, शनिवार, 6 जून 2020 से 5 जुलाई 2020 | पृष्ठ : 16 | मूल्य : 10 रूपये

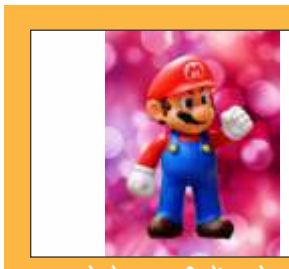

फोटोशाप सीखें - पेज 4

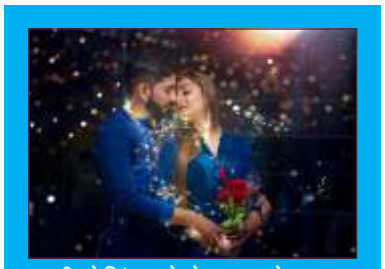

प्री वेडिंग फोटोशूट - पेज 5

महान विभूतियाँ - पेज 6-7

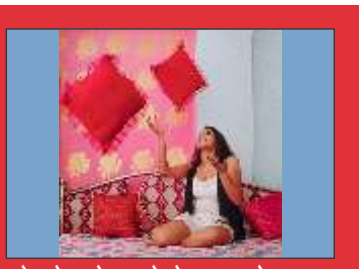

स्टे होम मेड फोटोशूट - पेज 8-9

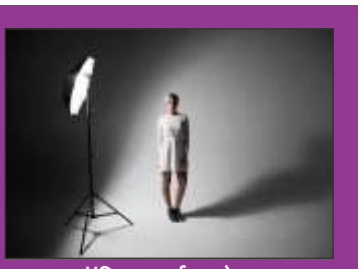

लाइट मॉडिफायर्स - पेज 10-11

अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय खबरें

ब्लैकजेट का सीएफ एक्सप्रेस टाइप बी व एक्सक्यूडी कार्ड रीडर, 4बे सिनेमा डॉक देता है थंडरबोल्ट 3 प्रदर्शन

ब्लैकजेट के पास दो स्टोरेज है - नया टीएक्स 4डीएस 4 बे सिनेमा डॉक थंडरबोल्ट 3 के साथ, और टीएक्स 1सीएक्सक्यू रीडर सीएफएक्सप्रेस के लिए टाइप बी और एक्सक्यूडी कार्ड। दोनों उत्पाद देते हैं डेटा ट्रांसफर 40जीबी/एस तक की स्पीड पर। थंडरबोल्ट 3 के होने की वजह से यह उन यूजर्स के लिए सही है जो अकसर अल्ट्रा एचडी फुटेज शूट करते हैं, भारी डेटा प्रोजेक्ट मैनेज करते हैं और वे लोग जो बड़े बैच में ड्राइव्ज में इमेज ट्रांसफर करते हैं।

सैमसंग का नया ISOCELL GN1 (आइएसओसीईएलएल जीएन1) जिसमें है टेट्रासेल टेक, एक्टिव पिक्सल पर फेस डिटेक्शन

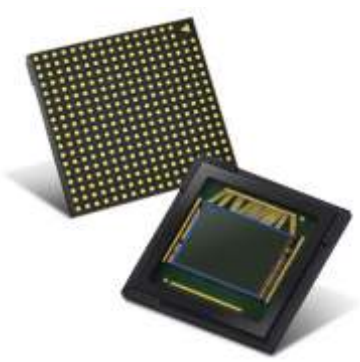

पिक्सल मर्जिंग तकनीक व एडवांस डुअल पिक्सल एएफ सैमसंग के आधुनिक इमेज सेंसर वृहद रेंज की शूटिंग स्थितियों में भी काम करते हैं।

एसडी एक्सप्रेस 8.0 का एलान, इसकी स्पीड होगी 4जीबी/एस तक व बेहतर प्रदर्शन भी

एसडी एसोसिएशन ने एलान किया अपने एसडी एक्सप्रेस 8.0 की खासियतों का जो मेमोरी कार्ड के लिए नया स्टैंडर्ड बनाएंगी। एसडी 8.0 पीसीआइई 4.0 सामान्य व एनवीएमई तकनीक का उपयोग करती है 4जीबी प्रति सेकेंड की स्पीड में ट्रांसफर करने के लिए।

सोनी जेडवी 1 कंटेट क्रिएटर कैमरा व्लॉगिंग आसान करने के लिए है

सोनी ने एलान किया जेडवी-1 का, इसे कंटेंट क्रिएटर कैमरा भी पुकारते हैं। यह 1"-टाइप 20एमपी स्टैक सीएमओएस सेंसर व 24-70एमएम, बराबर F1.8-2.8 लेंस के आसपास बना है जो कि RX100 III, IV, V and VA, जैसा है लेकिन यह पूरा टचस्क्रीन यूज करता है सेल्फी स्टाइल ऑपरेशन के लिए, व इरगोनॉमिक्स पर दोबारा काम करता है।

जेड कैम का नया ई2 एम4 एक सस्ता 4K रॉ शूटिंग सिनेमा कैमरा है लाइवस्ट्रीमिंग के साथ

चाइना का सिनेमा कैमरा निर्माता जेड कैम ने बताया कि यह एक कम मूल्य का ई2 कैमरे का वर्जन रिलीज कर रहे हैं जिसमें

पहले मॉडल की तुलना केवल मल्टी कैम सिंक्रोनाइजेशन की कमी है, पर जो कि लाइवस्ट्रीमिंग की अनुमति देगा बिना कम्प्यूटर के और इसका मूल्य करीब 500 डॉलर होगा।

पैनासॉनिक ने एलान किया ल्यूमिक्स एस 20-60 एमएम एफ3.5-5.6 लेंस एल-माउंट के लिए

पैनासॉनिक ने एलान किया अपने नए ल्यूमिक्स एस 20-60 एमएम एफ3.5-5.6 लेंस एल-माउंट बॉडीज के लिए। इसकी 20-60 एमएम फोकल लेंथ छोटी है लेकिन सबसे सबसे वैरिएबल अपर्चर स्टैंडर्ड जूम से चौड़ी है, जो कि करीब 28-80एमएम रेंज की है।

फूजीफिल्म ने रिलीज किया विंडोज ओनली एप आपकी एक्स सीरीज के लिए, जीएफएक्स कैमरा वेबकैम में

विंडोज प्रोग्राम 9 फूजीफिल्म एक्स सीरीज और जीएफएक्स सिस्टम मीडियम फॉर्मेट कैमरे के साथ काम करता है और वीडियो को उस फीड में बदल देता है जो कि वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सॉफ्टवेयर के साथ

उपयोग की जा सके।

कैनन लाया ईओएस वेबकैम यूटिलिटी बीटा मैकओएस के लिए

कैनन ने रिलीज किया ईओएस वैबकैम यूटिलिटी बीटा विंडो के लिए जो कि कम्प्यूटर स्वामियों को कम्पैटिबल ईओएस व पावरशॉट कैमरे को स्काइप व जूम वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कॉल के लिए वेबकैम में इस्तेमाल कर सकें।

अब कैनन ने एलान किया है कि वही उपयोगिता अब मैकओएस यूजर्ज के लिए उपलब्ध है, ताकि वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के लिए एप्पल यूजर्स भी इस फंक्शन का प्रयोग कर सकें। कैनन के मुताबिक, कई डाउनलोट विंडो वर्जन के लिए किए गए और सबसे अधिक फीचर जिसकी मांग थी वह था मैकओएस कम्प्यूटर्स सपोर्ट।

रिकोह लाया एचडी पेंटाक्ट डी एफए 85एमएम एफ1.4 लेंस

रिकोह ने अपने अपने पोट्रेट प्राइम के बारे में जानकारी दी है, एचडी पेंटाक्स डी एफए 85एमएम एफ1.4 ईडी एसडीएम एडब्लू आधिकारिक रूप से रिलीज हो गया है। यह नया लेंस देता है कई स्पेशल एलिमेंट्स, नया एएफ मोटर और हाई एंड पेंटाक्स लेंस से उम्मीद की जाने वाली हाई क्वालिटी भी।

सम्यांग ने एलान किया अपने एएफ 85एमएम एफ1.4 लेंस का जो कि कैनन आरएफ माउंड के लिए उपलब्ध है

आरएफ माउंट के अलावा यह लेंस पूववर्ती सोनी एफई के जैसा है और उम्मीद है कि जून में जब यह मिलना शुरू हो जाएगा तो रीटेल में इसका मूल्य 800 डॉलर होगा।

टैमरॉन का नया जूम लेंस फुल फ्रेम टीजर, सोनी ई माउंट कैमरों के लिए

यह टीजर अधिक जानकारी नहीं देता लेकिन विजुअल के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि यह मध्य रेंज जूम है जिसका साइज अमूमन 28-75 एमएम एफ2.8 लेंस जितना ही है।

अडोब की नई वीडियो सीरीज देती है लाइटरूम सीसी, 60 सेकेंड में मोबाइल टिप्स

अडोब ने रिलीज की नई वीडियो सीरीज जिसका नाम है इन यह लाइरूम मिनट, यह 60 सेकेंड में लाइटरूम सीसी व लाइटरूम मोबाइल के बारे में टिप्स देते हैं।

घर बैठे फोटोशॉप सीखें

राजेन्द्र प्रसाद
ARPS (LONDON), FICS (USA)
HON FSAP (INDIA), ASIIPC (INDIA)
डिजिटल इमेजिंग डिवीजन इंडिया इंटरनेशनल फोटोग्राफिक काउंसिल नई दिल्ली के अध्यक्ष
Blog - https://digicreation-blogspot-com/
You Tube : www.youtube.com/channel/UCZM4BH-m5bxnVetkWoyPoMQ

(भाग-9)

Magnetic Lasso Tool (मैगनेटिक लासो टूल)

अगर आपको कोई कहे कि फोटोशॉप में एक ऐसा सिलेक्शन टूल है जिससे आप केवल सब्जेक्ट के आउटलाइन पर ड्रैग करना है और वह खुद इतने से 90% तक ऑब्जेक्ट को सिलेक्ट कर लेगा तो क्या आप इस पर विश्वास करेंगे? सचमुच फोटोशॉप में इसी तरह का एक सिलेक्शन टूल है जिसे Magnetic Lasso Tool कहते हैं।

मैग्नेटिक लासो टूल पॉलीगोनल लासो टूल के नीचे रहता है इसे एक्टिवेट करने के लिए लासो टूल पर माउस क्लिक कर होल्ड करके रखें जब तक एक फ्लाई आउट मीनू आपके सामने नहीं आ जाता। तब इस पर क्लिक करके इसे सेलेक्ट कर ले इसका शॉर्टकट L है इसलिए कीबोर्ड में L दबाकर भी इसे एक्टिवेट किया जा सकता है।

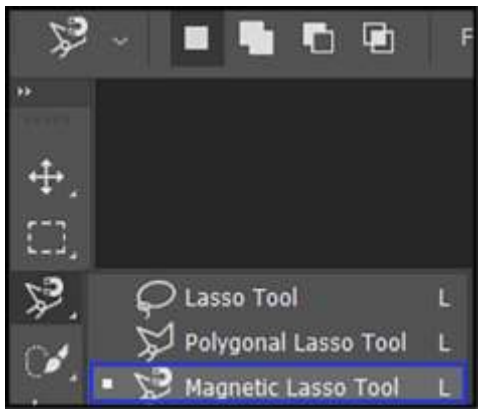

आखिर इससे मैग्नेटिक लासो टूल क्यों कहते हैं? स्टैंडर्ड लासो टूल से किसी एरिया को सिलेक्ट करने के लिए आपको मैनुअली सब्जेक्ट को ट्रेस करना पड़ता है जबकि मैग्नेटिक लासो टूल एक एज डिटेक्शन टूल है यानी आप जब इसे किसी ऑब्जेक्ट के चारों तरफ घुमाते हैं तो यह किनारे को खुद ढूंढता है और उस पर चुंबक की तरह चिपक जाता है।

आप शायद सोच रहे होंगे कि फोटोशॉप का यह टूल आपके ऑब्जेक्ट को पहचान लेता है जिसे आप सेलेक्ट करना चाह रहे हैं पर ऐसा नहीं है। मैग्नेटिक लैसो टूल ऑब्जेक्ट और बैकग्राउंड के बीच के कलर, ब्राइटनेस और कंट्रास्ट के अंतर के आधार पर उन्हें सेलेक्ट करता है।

इस टूल को अधिक एफिशिएंट बनाने के लिए हम उस एरिया को छोटा कर सकते हैं जहाँ इसे Edge की तलाश करनी है। लेकिन डिफ़ॉल्ट रूप से इस टूल में ऐसा कोई ऑप्शन नहीं होता है जिससे कि हम यह जान सकें कि यह Edge डिटेक्शन में किस एरिया का उपयोग कर रहा है। लेकिन एक ट्रिक है जिसका आप उपयोग कर सकते हैं, आप कीबोर्ड पर Caps Lock बटन को दबा दें इससे मैग्नेटिक लैसो टूल का आईकॉन एक ऐसे सर्किल में बदल जाएगा जिसके सेंटर में आपको एक क्रॉस हेयर दिखेगा। यह सर्किल उस एरिया को दर्शाता है जिसके अंदर फोटोशॉप Edge को ढूंढता है इस क्रॉस हेयर के नजदीक के एरिया को फोटोशॉप सिलेक्शन बनाने में ज्यादा महत्व देता है।

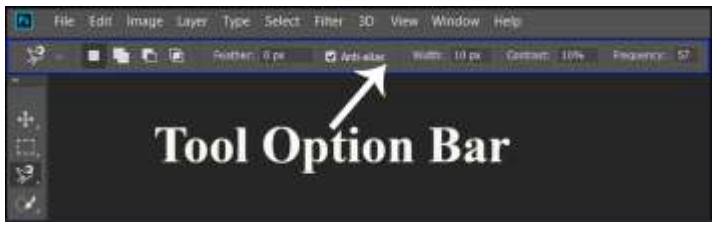

इस ट्यूटोरियल में मैं एक खिलौने को सेलेक्ट करके आपको दिखा रहा हूँ जिसे आप स्क्रीनशॉट में देख सकते हैं।

मीनू बार के नीचे Tool Option Bar होता है जहां से आप इस टूल के प्रॉपर्टीज को सेट कर सकते हैं। यहां Width सेट करने का प्रावधान रहता है इससे आप कर सके सर्किल के साइज को बड़ा या छोटा कर सकते हैं। अगर सब्जेक्ट का Edge वेल डिफाइंड है तो आप बड़ा Width सेटिंग ले सकते हैं पर डिफिकल्ट एरियाज के लिए छोटे Width का इस्तेमाल करें। टूल ऑप्शन बार सर्किल से Width को कम और बड़ा करने के बजाय ज्यादा अच्छा रहता है कि आप की बोर्ड के लेफ्ट और राइट ब्रैकेट की सहायता से इस सर्किल को बड़ा या छोटा करें। Left Bracket की सहायता से आप सर्किल को छोटा कर सकते हैं और Right Bracket की सहायता से आप इसे बड़ा कर सकते हैं।

टूल ऑप्शन बार के दाहिनी तरफ एक दूसरा ऑप्शन Edge contrast चुनने का भी होता है। Edge contrast यह निर्धारित करता है कि किसी चीज को Edge समझने के लिए फोटोशॉप सब्जेक्ट और बैकग्राउंड के बीच कितने कलर, ब्राइटनेस और कंट्रास्ट वैल्यू का इस्तेमाल करेगा। अगर सब्जेक्ट और बैकग्राउंड के बीच में कंट्रास्ट ज्यादा हो तो आप Edge contrast का परसेंटेज ज्यादा रखें और जहां कंट्रास्ट ज्यादा ना हो तो इसका परसेंटेज कम रखें करेगा ।

जैसे-जैसे आप सब्जेक्ट के चारों तरफ मैग्नेटिक लैसो टूल को चलाएंगे फोटोशॉप कुछ एंकर पॉइंट्स ऑटोमेटिकली क्रिएट करता है। आप टूल ऑप्शन बाद में फ्रीक्वेंसी सेटिंग से यह निर्धारित कर सकते हैं कि दो एंकर पॉइंट्स के बीच में कितना अंतर रहेगा फ्रीक्वेंसी आप जितनी ज्यादा रखेंगे यह उतनी ज्यादा नजदीक में एंकर पॉइंट्स बनाएगा इसकी डिफॉल्ट वैल्यू 57 रहती है जो कि अधिकांश केस में सही काम करती है।

सेलेक्शन शुरू करने के लिए माउस के क्रॉस हेयर को सब्जेक्ट के एज पर कहीं भी क्लिक कर दें और माउस बटन को छोड़ दें इससे एक स्टार्टिंग एंकर प्वाइंट बन जाएगा। एक बार जब स्टार्टिंग प्वाइंट बन जाए तो आप मैग्नेटिक लासो को सब्जेक्ट के चारों तरफ घुमाते चले केवल इतना ख्याल रखें कि ऑब्जेक्ट का एज Circle के बीच में हो आप देखेंगे कि मैग्नेटिक लासो टूल खुद सब्जेक्ट के एज से चिपकता चलता है और थोड़ी थोड़ी दूर पर खुद एंकर पॉइंट्स भी बनाता चलता है। स्टैंडर्ड लासो टूल की तरह आपको स्टार्टिंग पॉइंट पर क्लिक करने के बाद माउस बटन को दाबे रहने की जरूरत नहीं है आप उसे छोड़ सकते हैं।

कुछ ऐसे Edges भी आपको मिलेंगे जहां कंट्रास्ट कम होने के कारण आप देखेंगे कि फोटोशॉप Edge गलत डिटेक्ट कर रहा है ऐसे स्थान पर आप खुद से सही जगह पर क्लिक करके एक या अधिक एंकर पॉइंट्स डाल सकते हैं।

कभी-कभी ऐसा होता है कि एंकर प्वाइंट गलत जगह पर पड़ जाता है। ऐसे हालात में Backspace दबाकर आप अंतिम एंकर प्वाइंट को डिलीट कर सकते हैं। आप जितने बार बैक स्पेस को दबाएंगे उतने एंकर प्वाइंट क्रमशः डिलीट होते चले जाएंगे।

कभी-कभी मैग्नेटिक लैसो टूल सही से सिलेक्शन नहीं कर पाता है। अगर आप लास्ट क्लिक के बाद ALT Key को दबा दें और पहले वाले पॉइंट से थोड़ी दूर पर क्लिक करें तो आप बअ देखेंगे कि आपका माउस थोड़ी देर के लिए Polygonal Lasso Tool में बदल गया है ALT बटन को दावे रहें और उस डिफिकल्ट एरिया को Polygonal Lasso Tool से सेलेक्ट कर ले उसके बाद ALT बटन को छोड़ दें आपका माउस फिर से मैग्नेटिक लैसो टूल में बदल जाएगा और आप आगे की सेलेक्शन करते चले जाएं।

सब्जेक्ट को पूरा सिलेक्ट कर लेने के बाद स्टार्टिंग पॉइंट पर क्लिक करके आप सेलेक्शन को पूरा कर दें जैसे ही आप स्टार्टिंग पॉइंट के नजदीक माउस को ले जाएंगे आप देखेंगे कि आपके कर्सर के दाहिनी तरफ नीचे एक छोटा सर्किल बन गया है यह इस बात का संकेत है कि आप स्टार्टिंग पॉइंट के नजदीक पहुंच चुके हैं बस यहां माउस से क्लिक कर दें आपका सिलेक्शन पूरा हो जाएगा और आप के सेलेक्शन के चारों तरफ Marching ants दिखने लगेंगे यह एक सेलेक्शन प्रीव्यू है जो कि आपको बतलाता है कि यह एरिया जहां Marching ants दिख रहे हैं सिलेक्टेड हो चुका है।

सिलेक्शन पूरा होने के बाद आप एक बैकग्राउंड इमेज खोलें जिस पर आपको इस खिलौने को पेस्ट करना है। V बटन दाबकर Move स्टूल को एक्टिवेट कर ले अब खिलौने के डॉक्यूमेंट पर क्लिक करें और खिलौने को ड्रैग करके बैकग्राउंड के ऊपर डाल दें आपका खिलौना एक नए बैकग्राउंड पर Paste हो जाएगा।

अब आप अपनी कोई इमेज खोलें और मैग्नेटिक लैसो टूल की सहायता से ऊपर के बतलाए गए तरीकों की मदद लेकर उसे सेलेक्ट करने की कोशिश करें। आशा है यह ट्यूटोरियल आपको पसंद आया होगा अगले अंक में फिर आपसे मुलाकात होगी तब तक के लिए मुझे आज्ञा दें आपका दिन मंगलमय हो।

YouTube चैनल के लिये QR कोड स्कैन करें।

STUDIO NEWS
लखनऊ, शनिवार, 6 जून 2020 से 5 जुलाई 2020

फोटोग्राफी सत्य है। -- जीन ल्यूक गोडार्ड

प्रेम की अभिव्यक्ति - प्री वेडिंग फोटोशूट

गणेश शर्मा
मेंटर एवं वेडिंग फोटोग्राफर

विगत कुछ वर्षो से प्री-वेडिंग फोटोशूट का चलन महानगरों से होते हुए छोटे शहरों तक भी पहुँच गया है। अक्सर विवाह समारोहों में प्री-वेडिंग सांग या फोटो स्लाइड दिखाया जाना आज कल वैवाहिक समारोहों का हिस्सा बन गया है, प्री वेडिंग सान्ग कपल को एक ओर जहाँ फ़िल्मी रोमांस सा रोमांचक अनुभव कराते हैं वहीं दूसरी ओर प्री-वेडिंग फोटोशूट सोशल मिडिया पर बारम्बार आकर्षक डी पी बदलने एवं कपल के आपसी प्रेम की प्रगाढ़ता व सम्बन्धों की गहराई को मॉडर्न तरीके से प्रदर्शित करने का माध्यम बनता जा रहा है। अब अरेंज मैरेज में भी सगाई के बाद और विवाह के पहले इस प्रकार का फोटो शूट कभी-कभी कपल के चाहत अथवा परिवार के पहल पर भी होता है, इस प्रकार के फोटोशूट में कपल को एक दूसरे को जानने का बेहतर अवसर भी प्राप्त होता है। ऐसा देखने में आया है कि फोटोशूट के दौरान लड़का लड़की एक दूसरे निकट भी आ पाते हैं।

प्री-वेडिंग फोटोशूट और वैवाहिक कपल फोटोशूट में एक विशेष अंतर होता है। वह यह है कि शादी समारोहों में अक्सर दूल्हा-दुल्हन का असली चेहरा भारी मेक-अप, गहनों और विशेष प्रकार के परिधानों में बदल जाता है, वहीं प्री-वेडिंग अथवा पोस्ट-वेडिंग कपल फोटोशूट में उनका चेहरा व स्वरूप सामान्य जैसा ही रहता है। जिन परिवारों में प्री-वेडिंग फोटोशूट का माहौल नहीं होता है अथवा आज्ञा नहीं होती है वहाँ पर कोई-कोई कपल कभी पोस्ट-वेडिंग या हनीमून फोटोशूट भी कराते हैं।

ज्यादातर फोटोशूट आकर्षक एवं रोमांटिक स्थलों पर ही होते हैं जहाँ फोटोशूट के लिए सुन्दर बैकग्राऊंड और खुशनुमा माहौल दोनों प्राप्त होता है। इसके अलावा कुछ क्रिएटिव फोटोशूट का तड़का सभी अच्छे फोटोग्राफर अवश्य लगाते हैं, जिससे कुछ फोटो पोस्टर के रूप में प्रिंट होकर घर की दीवारों की शोभा बढ़ाते हैं। फोटोशूट के लिए प्रमुख स्थलों में जयपुर, उदयपुर, लखनऊ, वाराणसी, आगरा, केरल, दिल्ली, मुम्बई, मनाली, सिक्किम, जम्मू कश्मीर के सोनमर्ग सहित अन्य बहुत से पर्यटक स्थल प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त कुछ विशेष कृत्रिम या बनावटी शूटिंग लोकेशन भी कपल को आकर्षित करते हैं, जहाँ विभिन्न प्रकार के स्पॉट बने होते हैं। इस प्रकार के स्थलों में फोटोग्राफर को शूट करने में थोड़ी आसानी होती है क्योंकि ऐसे स्थान केवल शूटिंग के लिए ही बने होते हैं, यहाँ व्यवधान डालने वाला कोइ नहीं होता है, जबकि सार्वजनिक स्थलों पर फोटोशूट के समय कुछ लोगों की भीड़ अवश्य एकत्रित होने की संभावना रहती है। कभी-कभी सामान्य जन के तरफ से यह प्रश्न भी पूछा जाता है कि "किसी अल्बम की शूटिंग चल रही है क्या"?

छोटे शहरों में अक्सर ऐसा होता है कि कपल अपने वैवाहिक फोटोग्राफर से सभी समारोह की फोटोग्राफी तो कराता है परन्तु प्री-वेडिंग, पोस्ट-वेडिंग फोटोशूट बाहर जाकर अन्य फोटोग्राफर से करवाता है, और अच्छा बजट भी खर्च करता है। आईये विचार करते हैं कि ऐसा क्यों होता है? और हम फोटोग्राफर भाई कैसे अपने शहर में एक बेहतर फोटोशूट करके ज्यादा इज़्ज़त और पैसे कमा सकते हैं?

प्री-वेडिंग फोटोशूट से पहले अक्सर कपल या ज्यादातर भावी दुल्हनें गूगल पर फोटो सर्च करती हैं, और अपने लिए कुछ बेहतरीन पोज़ का चयन करती हैं, उसके बाद बेहतर फोटोशूट के लिए एक बेहतर फोटोग्राफर की खोज प्रारम्भ होती है। विवाह हेतु फोटोग्राफर का चुनाव उनके परिजनो ने अगर पहले से ही कर रक्खा है तो वह उनके (फोटोग्राफर के) प्रोफइल इत्यादि की जाँच करते हैं, अगर इन फोटोग्राफर महोदय ने पूर्व में कोई अच्छा फोटोशूट नहीं किया है तो फिर फोटोशूट बाहर जाकर दूसरे फोटोग्राफर से करवाना उनकी मजबूरी हो जाती है।

स्टूडियो न्यूज़ के माध्यम से हम जानेंगे कि प्री-वेडिंग/पोस्ट-वेडिंग फोटोग्राफी कैसे होती है, कैमरा सेटिंग, कौन से लेंस उपयोगी हैं, किस लेंस का प्रयोग कब करना है, लाइटिंग, प्रॉप्स, ड्रेस, मेक-अप इत्यादि।

प्री-वेडिंग / पोस्ट-वेडिंग या इससे मिलते जुलते फोटोशूट में सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह होती है कि यह शूट हमें फोटो में जितना सरल दिखता है उतना आसान होता नहीं है। केवल विभिन्न प्रकार के पोज़ में फोटो खींचना ही प्री-वेडिंग फोटोग्राफी नहीं होती है, कपल का आपसी प्रेम एवं विभिन्न प्रकार की भाव-भँगिमा का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान हैं, भिन्न-भिन्न कम्पोजिशन, विभिन्न प्रकार के एक्सप्रेशन एवं कुछ स्पेशल इफ़ेक्ट भी क्लाइंट की चाहत होती है, और यही सब बातें प्री-वेडिंग फोटोशूट को सामान्य फोटोशूट से आकर्षक एवं अलग बनाती हैं।

अपने उत्तर भारत में एक महत्त्वपूर्ण बात हमें हमेशा ध्यान में रखना होता है कि यह रोमांटिक फोटोशूट जनसाधारण में देखने-दिखाने लायक अवश्य हो, क्योंकि वैवाहिक समारोहों में LED टीवी पर प्रसारित यह फोटो वीडियो घर के बड़े बुजुर्ग भी सब के साथ देखते हैं। विगत समय में मध्य प्रदेश सहित कई अन्य स्थानों पर जैन समाज, सिंधी समाज आदि ने प्री-वेडिंग शूट को प्रतिबन्धिन कर दिया था। अतः फोटोशूट में हमें किसिंग के द्वारा रोमांस दिखाने से बचना चाहिए।

शूट प्रारम्भ करने से पूर्व फोटोग्राफर को बहुत सारी तैयारियां करनी पड़ती हैं, उनमे से एक है अच्छे शूटिंग लोकेशन की रेकी करना, शूट के कुछ दिन पूर्व जाकर उस स्थान का चयन करना जहाँ पर सुन्दर फोटो खींची जा सके, वहाँ की लाइटिंग कंडीशन देखना, किस समय एवं किस दिन वहाँ भीड़ बिलकुल भी न रहती हो जहाँ हमें शूट करना है, स्थान चाहे कितना भी सुन्दर क्यों न हो अगर वहाँ शूटिंग के समय अगर भीड़-भाड़ ज्यादा होगी तो आप का कपल भीड़ में शायद ही सहज होकर फोटोशूट करा पाए, कैंडल लाइट फोटोशूट के लिए किसी रेस्टोरेंट का चयन भी कर सकते हैं, परन्तु रेस्टोरेंट के मैनेजर से वहाँ शूट करने की आज्ञा पूर्व में अवश्य प्राप्त कर लेनी चाहिए। रेस्टोरेंट में शूट के लिए भीड़ से पहले का समय ही उपयुक्त होता है, ऐसे समय में शूट करने पर पूरा रेस्टोरेंट खाली मिलता है और कपल भी काफी सहज महसूस करता है।

रेस्टोरेंट में फोटोशूट हेतु बैटरी वाला झालर, वीडियो LED लाइट, गुलाब के फूल, आकर्षक मोमबत्तियाँ इत्यादि सामग्री साथ ले जाएँ, अपने क्लाइंट को पार्टी वियर ड्रेस पहनने के लिए बोले, सन्दर्भ हेतु कुछ रेस्टोरेंट की फोटो आप देख सकते हैं, अगले लेख में हम आपको विभिन्न प्रकार के शूट में कैमरा सेटिंग, लेंस और अन्य सेटिंग के बारे में जानकारी प्रदान करेंगे।

महान विभूतियाँ

सुब्रतो रे

FRSA, ARPS, EFIAP, Hon. FIP, FSIIPC, ESIIPC, Hon. APSG

(1932 - 2020)

सुब्रतो रे

प्रो. सुब्रतो रे का जन्म 22 सितंबर 1932 को रांची (अब झारखंड) में उनके दादा के घर हुआ। वर्ष 1947 में जब वे मात्र 14 साल के थे तब अपने पिता के मार्गदर्शन व माता के फोल्डिंग रोल फिल्म कैमरे के साथ उन्होंने शौकिया फोटोग्राफी शुरू की। 1956 तक वह भारत के दूसरे अंतरराष्ट्रीय एक्जिबीटर बनकर उभरे थे, 1957 में फोटोग्राफिक सोसाइटी ऑफ अमेरिका ने उन्हें 1957 से 1962 तक विश्व में भारत के दूसरे सर्वश्रेष्ठ एक्जिबीटर की उपाधि दी। सुब्रतो रे अपनी कलात्मक फोटोग्राफी के लिए जाने जाते थे, वह डार्करूम तकनीक जैसे सुपरइम्पोजिशन, स्यूडोसोलोराइजेशन, सोलोराइजेशन, टोन सेपरेशन इत्यादि से इमेज बनाने के लिए मशहूर थे, उन्हें डार्करूम मास्टर भी कहा जाता था। इनके दो छायाचित्र 'बीच ऑफ लाइफ' और 'द फिड्लर' बहुत ही चर्चित हुए। उनके कुछ और प्रतिष्ठित कार्यों में शुमार है-थ्री फिंगर, वायलिन, इनविटेशन टू अ स्टार, थ्री ट्रायो, नेकिडनेस, बुद्धा, रिदम व म्यूजिक इत्यादि।

उन्होंने एंथ्रोपॉलोजी से एमएससी, अंग्रेजी से एमए और एलएलबी किया, व जर्मन भाषा के सर्टिफिकेट का कोर्स भी किया।

फेडरेशन ऑफ इंडियन फोटोग्राफी (FIP) के सुब्रतो रे एक बेहद महत्वपूर्ण सदस्य थे। लंबे समय तक वह FIP के वाइस प्रेजिडेंट रहे, साथ ही उन्होंने कुछ समय के लिए IIPC के प्रेडिटेंट के तौर पर भी कार्य किया। फोटोग्राफी की कला के अलावा, घूमना, फोटोग्राफी की कला को सिखाना, किताबें लिखना व आर्टिकल लिखना, क्रिएटिव व पिक्टोरियल फोटोग्राफी उनके शौक थे।

उन्हें FRSA, ARPS, EFIAP, हॉनरेरी एसोसिएट ऑफ द पाकिस्तान सैलून ग्रपु, Hon. FIP, FSIIPC, ESIIPC इत्यादि सम्मान मिले। विश्व के कई देशों में उन्हें अवॉर्ड मिले, जैसे कि जापान, नीदरलैंड, इंग्लैंड, फ्रांस, हंगरी, हॉन्ग-कॉन्ग, सिंगापुर, जर्मनी, अर्जेनटीना इत्यादि। 1969 में उन्होंने अपनी पहली एकल प्रदर्शनी नन्दन आर्ट गैलरी, कला भवन, विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांति निकेतन में लगाई।

सुब्रतो रे लंबे समय तक फेडरेशन ऑफ इंडियन फोटोग्राफी (FIP) के एक महत्वपूर्ण सदस्य रहे थे। बतौर एडिटर उन्होंने FIP गोल्डन जुबिली 2003 मनाने के लिए "जुबिली व्यूफाइंडर, ए कम्पैडियम ऑफ फोटोग्राफी" की रचना के लिए काम किया। यह किताब प्रतिष्ठित फोटो आर्टिस्ट द्वारा लिखे गए लेखों का अद्भुत संग्रह है।

सुब्रतो रे IIPC - इंडियन इंटरनेशल फोटोग्राफिक काउंसिल के महत्वपूर्ण फाउंडिंग सदस्य भी रहे हैं। इसका गठन 1983 में हुआ था।

उनके उल्लेखनीय 25 छायाचित्रों की "इमेजेज़" नामक पुस्तक 2017 में पब्लिश हुई थी। अंग्रेजी कवि, अभिनेता, संगीतकार व मल्टीटैलेंटेड हरिंद्रनाथ चट्टोपाध्याय इस किताब के सह लेखक हैं, उन्होंने इसकी तस्वीरों के लिए कविताएं लिखी हैं। अतः यह किताब कविताओं व तस्वीरों का अद्भुत संगम बन गई। आज के दौर में बदलती तकनीकों के बीच इस किताब का एतिहासिक महत्व है। आज के फोटोग्राफर्स यह देखकर अचंभित होते हैं कि पहले के समय में बिना कम्प्यूटर के यह संभव हुआ।

वर्धमान विश्वविद्याल से बतौर प्रोफेसर रिटायर हुए, कलकत्ता हाई कोर्ट में वकालत की, और लेखक, शिक्षक व फोटोआर्टिस्ट भी रहे।

उन्होंने पूरे भारत में व जापान, हॉन्ग कॉन्ग, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अमेरिका के फोटोग्राफिक सोसाइटी ऑफ अमेरिका व रॉचेस्टर के अलावा कनाडा, मेक्सिको, अफ्रीका व रॉयल फोटोग्राफिक सोसाइटी, ग्रेट ब्रिटेन मिलाकर पूरे यूरोप व पूरे विश्व में 1952 से 1962 में पिक्टोरियल तस्वीरें प्रदर्शित की, इनमें अधिकतर ब्लैक एंड व्हाइट थीं। इससे उन्हें कई अवॉर्ड व सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर प्राप्त हुए। टोरंटो से उन्हें मेडल मिले जहां यूसुफ कार्श निर्णायकों में से एक थे, एम्स्टरडैम में उन्हें लैंडस्केप के लिए FIAP से प्रथम पुरस्कार मिला भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए।

उन्होंने अपनी तस्वीरों के लिए कई कैमरों का प्रयोग किया जिसमें शामिल हैं रॉलीफ्लैक्स, लाइका, कारबाइन प्लेट कैमरा, अगिलुक्स 6एक्स6 एसएलआर, याशिका, मिनोल्टा व कैनन एसएलआर और फूजी डिजिटल कैमरा।

उन्होंने 1948 में फोटोग्राफी पर लेख लिखने शुरू कर दिए थे व व्यू फाइंडर (फेडरेशन ऑफ इंडियन फोटोग्राफी का ऑफिशियल जर्नल) में कई लेख व रिपोर्ट से अपना योगदान दिया। एक लेख जो कि व्यू

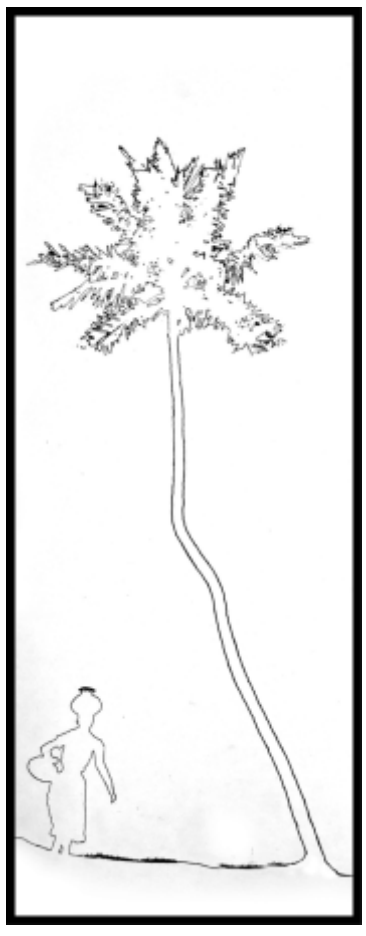

STUDIO NEWS
लखनऊ, शनिवार, 6 जून 2020 से 5 जुलाई 2020

जब मेरे हाथ में कैमरा होता है उस समय दुनिया की कोई बात मुझे नहीं डरा सकती। -- अल्फ्रेड आइसेनटाड

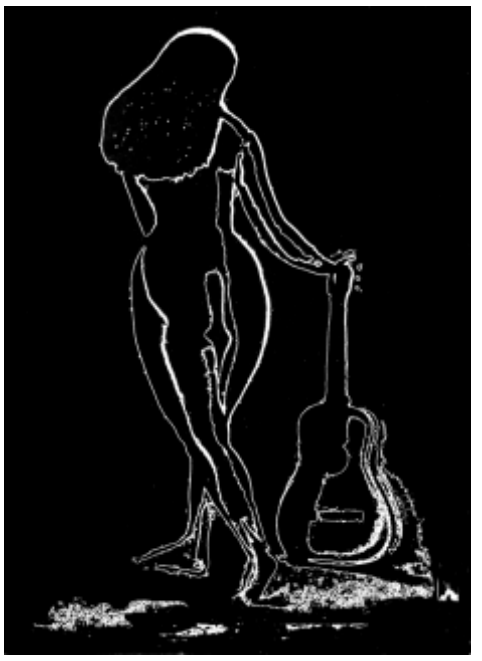

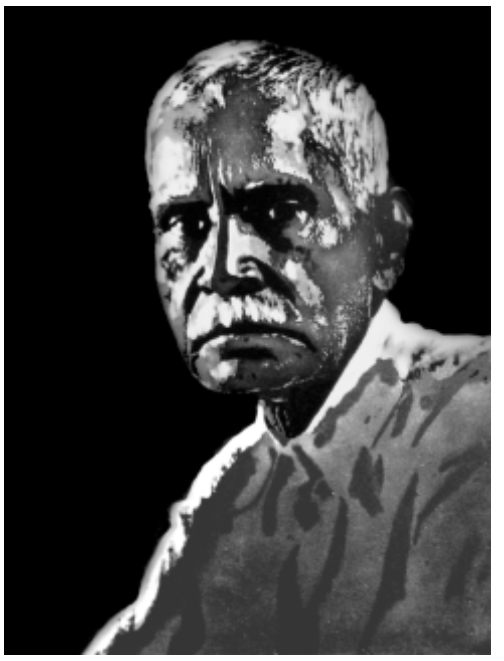

फाइंडर में प्रकाशित हुआ था जिसमें पिक्टोरियल फोटोग्राफी की लॉजिकल व संतुलित अप्रोच के बारे में चर्चा थी, यह इतना बेहतरीन था कि इंटस्टीट्यूट ऑफ ब्रिटिश फोटोग्राफर्स जो कि ब्रिटेन का सबसे सम्मानित प्रोफेशनल फोट्रोग्राफिक बॉडी है, ने पूरा आर्टिकल को ज्यों का त्यों 'रिकॉर्ड' (ऑफिशयल जर्नल) में प्रकाशित किया, व्यू फाइंडर के संपादक की अनुमति लेने के बाद। इसने न केवल व्यू फाइंडर की प्रतिष्ठा बढ़ाई, फेडरेशनल ऑफ इंडियन फोटोग्राफी (एफआइपी) का मान भी बढ़ा। उसी लेख का बाद में स्पैनिश में अनुवादित कर दक्षिण अमेरिका में छापा गया।

वह (1990-2009) कई सालों तक व्यू फाइंडर के एसोसिएट एडिटर व FIP के वाइस प्रेजिडेंट रहे।

वह फोटोग्राफिक एसोएसिशन ऑफ दमदम कोलकाता द्वारा आयोजित राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में नियमित रूप से अपना योगदान व प्रतिभागिता देते थे, एफआइपी की कई कन्वेन्शन्स में भी हिस्सा लेते रहते थे। वह छह दशक तक IIPC की कई कार्यशालाओं व सेमिनार में संकाय का हिस्सा थे।

वर्ष 1962 से वह राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सैलून नियमित रूप से जज करते थे।

पढ़ाने में उनके पसंदीदा विषय कंपोजिशन, ऐस्थेटिक्स व एक्सपेरिमेंटल तकनीक थे।

दिल्ली में हुई IIPC के जजों की कार्यशाला के दौरान प्रोफेसर सुब्रतो रे से मेरी पहली मुलाकात हुई, इसके बाद कई बार फोटोग्राफिक एसोसिएशन ऑफ दमदम द्वारा आयोजित हुई कई अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के दौरान उनसे कई बार कोलकाता में मिलना हुआ। वह एक लाजवाब वक्ता, शिक्षक और उम्दा पिक्टोरियलिस्ट थे, और एक बेहतरीन शख्सियत भी। उनसे मिलना बढ़ा और एक गहरा रिश्ता बनता चला गया। वैसे तो वह मुझसे उम्र में बहुत बड़े थे लेकिन मुझसे दोस्त जैसा ही व्यवहार करते थे। हमने उनका एक लेक्चर लखनऊ कैमरा क्लब के तत्वावधान में राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ में आयोजित किया गया और इसी दौरान लखनऊ कैमरा क्लब की ओर से उन्हें सम्मानित भी किया गया था।

फोटोग्राफी में उनका योगदान कलाकार व एक शिक्षक के तौर पर हमेशा यादगार रहेगा।

महान फोटो आर्टिस्ट सुब्रतो रे का निधन अभी हाल ही में 30 मई, 2020 को सुबह पांच बजे शांतिनिकेतन में हुआ।

प्रो. सुब्रतो रे द्वारा ली गई तस्वीरों को मुझे उपलब्ध कराने में मेरे मित्र श्री तीर्थ दासगुप्ता और अन्य जानकारियों के लिये डा. शांति कुमार मण्डल का मैं अति आभारी हूँ।

अनिल रिसाल सिंह
MFIAP (France), ARPS (Great Britain), Hon.FIP (India), Hon.LCC (India), FFIP (India), AIIPC (India), Hon.FSoF (India), Hon.FPAC (India), Hon.TPAS (India), Hon.FSAP (India), Hon.FICS (USA), Hon.PSGSPC (Cyprus), Hon.FPSNJ (America), Hon. Master-TPAS (India), Hon. Master-SAP (India), Hon.FWPAI (India), Hon.FGGC (India), Hon.GA-PSGSPC (Cyprus)
पूर्व अध्यक्ष, फेडरेशन ऑफ इण्डियन फोटोग्राफी

लॉकडाउन में स्टे होम मोड फैशन शूट

मुकेश श्रीवास्तव
FIE, FFIP, EFIAP
इंजीनियर, फोटोग्राफर, लेखक,
पूर्व निदेशक (ई), भारत सरकार
निदेशक, सेण्टर फॉर विजुअल आर्ट्स
निकॉन मेण्टर (2015-2017)
एवं अध्यक्ष, धनबाद कैमरा क्लब

लॉकडाउन के दौरान हम सभी फोटोग्राफर्स वास्तविक रूप से घर के अंदर बंद हो गए। हमने स्टे होम मोड पर काम करना शुरू किया। कुछ फोटोग्राफर्स ने टेबल टॉप व ड्रॉपलेट फोटोग्राफी के साथ प्रयोग किया। तो कुछ ने अपने पुराने चित्रों के संग्रह से एडिटिंग करनी शुरू की। अपनी जानकारी और क्षमता को दुरूस्त करने का यह एक अच्छा समय था। फोटो ट्यूटोरियल देखकर व लेख पढ़कर एडवांस फोटोग्राफी तकनीक व पोस्ट प्रोसेसिंग तकनीक सीखी लोगों ने।

मैंने भी अप्रैल के माह में कुछ टेबल टॉप फोटोग्राफी की। मई के प्रथम सप्ताह में मुझे वीडियो चैटिंग एप पर पोट्रेट व फैशन शूट का आइडिया मिला। मैंने गूगल पर खोजा तो विश्व के कई फोटोग्राफर्स मिले जो वीडियो चैटिंग एप जैसे कि फेस टाइम, गूगल डुओ, स्काइप इत्यादि से फोटोग्राफी कर रहे थे, इनमें कुछ भारत से भी थे।

भारत में एंजियो फर्नान्डेस, अनिल खन्ना, वसंत कुमार व सुंदर रामू ने अलग-अलग जगहों से मॉडल्स के साथ स्टे होम मोड में फैशन शूट किया। अधिकतर लोगों ने फेस टाइम वीडियो कॉलिंग एक का सहारा लिया। बाकियों ने गूगल डुओ व स्काइप वीडियो कॉलिंग एप से शूट किया। फेस टाइम एपल कम्पनी का एप है और अपने देश में आई फोन के यूजर्स करीबन 1 से 2 प्रतिशत ही हैं इसलिये हमने फेस टाइम एप का प्रयोग नहीं करने का निर्णय लिया। अतएव मैंने कुछ पोट्रेट व फैशन शूट गूगल डुओ व स्काइप का इस्तेमाल कर के किया। मैंने धनबाद से मिस झारखंड प्रेरणा हज़रा, मिस देवघर मेघना साक्षी व दीक्षा सिंह के साथ कुछ सेशन किए। दोनों में ही मॉडल की ओर से मोबाइल हैंडहेल्ड था। मॉडल की ओर से ज़रा सा भी मोबाइल हिलने पर शार्प इमेज की क्वालिटी खराब हो रही थी।

मेरे स्टे होम मोड के शुरूआती शूट देखिए: **Fig.1: दीक्षा सिंह, Fig.2: मेघना साक्षी, Fig.3: प्रेरणा हज़रा**

मैं अंतिम परिणाम से खुश नहीं था, इसका कारण था कम्प्यूटर स्क्रीन का छोटा डिस्प्ले, कम रिज्यॉल्यूशन व खराब क्वालिटी इमेज। मॉनिटर पिक्सल के कारण इंटरलेसिंग भी एक समस्या थी। हालांकि इसे पोस्ट प्रोसेसिंग में ठीक किया जा सकता था पर पिक्चर क्वालिटी में कॉम्प्रोमाइज करना होता। इसलिए मैंने किसी भी हिलने डुलने से बचने के लिए ट्राइपॉड में बने मोबाइल होल्डर का प्रयोग करने की सोची।

लॉकडाउन के कारण, यह संभव नहीं था कि देवघर व धनबाद में कैमरा ट्राइपॉड अरेंज किया जाता, इसलिए मैंने कोलकाता की सुनती मोंडल से सम्पर्क किया जिनके पास मोबाइल होल्डर में कैमरा ट्राइपॉड फिट था। मैंने उन्हीं के साथ प्रोफेशनल फैशन शूट करने की ठान ली।

उत्तराखंड के फोटोग्राफर्स के साथ जूम वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग एप के जरिए फोटो सेमिनार के दौरान मैंने प्रतिभागियों की तस्वीरें काफी बड़े साइज में देखी, फेस टाइम, गूगल डुओ व स्काइप जैसी वीडियो कॉलिंग एप से लगभग 3 से चार गुना बड़ी तस्वीरें।

मैंने फैसला किया कि मैं स्टे होम मोड में प्रोफेशनल तरह से फैशन शूट करूंगा। मैंने गहनता से मॉनिटर के तकनीकी आयामों को पढ़ा व समझा और पिक्सल के कार्यों को जाना। जब मैंने पिक्सल ब्लिंक ऑन व ऑफ के बारे में पढ़ा, मेरे ख्याल में तत्काल स्लो शटर तकनीक कौंध कई।

सुनीता मोंडल के साथ मेरे पहले प्रोफेशनल फोटो शूट में मैने 1/50s से 1/10s शटर सेटिंग अपने DSLR में रखी मॉडल कैप्चर करने के लिए। मैंने अपनी मॉडल से कैमरा ट्राइपॉडल में मोबाइल फिट करने का आग्रह किया ताकि किसी प्रकार के मोबाइल हिलने से बचा जा सके।

मैंने फिर अपनी मॉडल से पोज करने के बाद करीब 2 सेकेंड तक पोज होल्ड करने को कहा। मैंने जूम वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग एप पर सुनीता मोंडल के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग शुरू की। मैंने उनका ऑनलाइन कुछ कॉस्ट्यूम दिखाने का आग्रह किया ताकि मैं मैचिंग कपड़े बता सकूं।

मैंने उनसे यह भी आग्रह किया कि वह मुझे अपने घर का इंटीरियर व छत की अलग-अलग लोकेशन्स दिखाएं। मैंने उनके कमरे की वह छत की सही लोकेशन चुनी। अब मुझे एक सहायक की जरूरत थी जो कि मॉडल की तरफ हो। सुनीता मोंडल के एक मित्र सुरजीत दास मेरे असिस्टेंट फोटोग्राफर बनने को राजी हो गए।

मैंने जूम एप पर अपनी तकनीक के साथ पहला फैशन शूट 12 मई, 2020 को उनके घर के भीतर किया। सामान्य रूप से साक्षात यानी फिजिकल फोटो शूट के नतीजों के काफी करीब था यह फोटोशूट। 20×30 इंच प्रिंट साइज पर इमेज को बढ़ाने के बाद भी पिक्सेलेशन नहीं हुआ। जूम का प्रयोग करते हुए प्रोफेशनल फोटो शूट की यह तकनीक भारत में पहली है। नतीजे बेहद बेहतरीन व हौसला देने वाले थे। **फिग 4, 5 व 6 देखिए।**

अंततः मुझे सफलता मिली और मैंने कोलकाता में सुनीता मोनाडल व अलीपुरदुआर में चंद्रानी होरे के साथ कई फैशन शूट किए।

सबसे पहले उस तकनीक को समझते हैं जिसका प्रयोग मैंने किया। **(Fig.7, Fig.8)**

फोटोग्राफर के कम्प्यूटर पर व मॉडल के मोबाइल में जूम एप डाउनलोड होनी बहुत जरूरी है। मॉडल की ओर से अधिक रिज्यॉल्यूशन (16एमपी, 32एमपी) वाला कैमरा ठीक रहता है। ट्राइपॉड पर बने होल्डर पर मोबाइल को कस कर फिट कर देना चाहिए। चुनी हुई जगह पर फोटोग्राफर द्वारा मॉडल को पोज़ देने को कहा जाएगा। सटीक फ्रेम के लिए असिस्टेंट फोटोग्राफर व किसी अन्य व्यक्ति की जरूरत होती है। फोटोग्राफर के ही अनुसार वह व्यक्ति या असिस्टेंट मॉडल की ओर से मोबाइल नीचे, ऊपर अथवा घुमाने के निर्देशों का पालन करेगा तब तक, जब तक फोटोग्राफर को मनमुताबिक फ्रेम नहीं मिल जाता। फिग 7 व 8 में दिखाया गया सेटअप अपने आप में स्पष्ट करता है।

Fig.4

Fig.5

Fig. 6

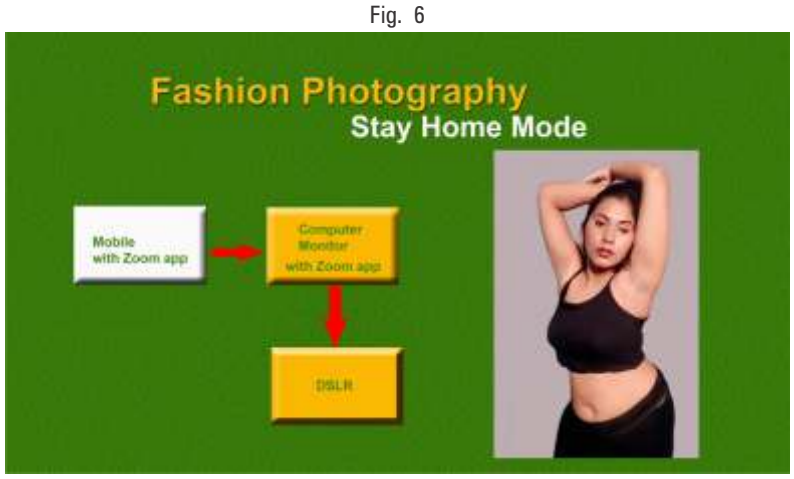

Fig. 7

Fig. 8

Fig.1: दीक्षा सिंह

Fig.2: मेघना साक्षी

Fig.3: प्रेरणा हज़रा

स्टे होम मोड में सुनीता मोनाडल के साथ प्रोफेशनल फोटो शूट का लुत्फ लीजिए। इसमें मॉडल की ओर से प्रयोग की गई डिवाइस है रियलमी प्रो मोबाइल व फोटोग्राफर ने इस्तेमाल किया है निकॉन डी500, **देखिए फिग 9 से 16** एवं **19**

STUDIO NEWS
लखनऊ, शनिवार, 6 जून 2020 से 5 जुलाई 2020

एक इंसान का किरदार एक फोटोग्राफ की तरह अंधेरे में ही पनप सकता है। -- यूसुफ कार्ष

Fig.9

Fig.10

Fig.11

Fig.12

Fig.13

Fig.14

Fig.15

Fig.16

मैंने स्टे होम मोड में कुछ फैशन शूट चंद्राणि होरे के साथ किया। वह उत्तरी बंगाल के अलीपुरदुआर की रहने वाली हैं। इसमें मॉडल ने वीवो वी15 व फोटोग्राफर ने निकॉन डी500 प्रयोग किया है। **फिग 17 व 18 देखिए।**

Fig.17

Fig.18

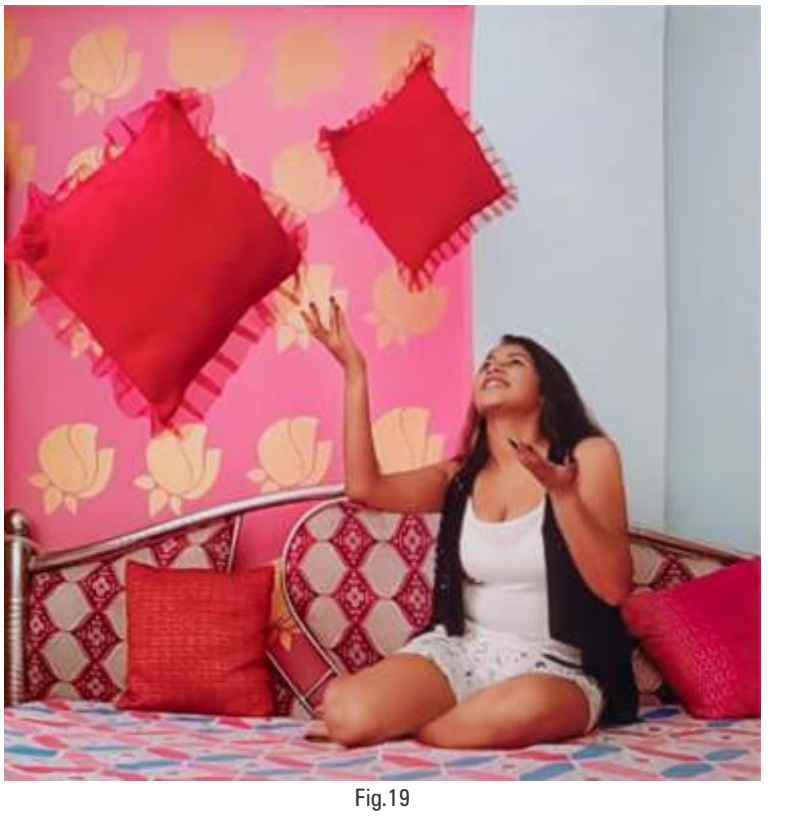

Fig.19

इस विषय पर मैंने एक ट्यूटोरियल बनाकर 16 मई, 2020 को अपलोड किया है, ताकि अन्य फोटोग्राफर्स भी सीखें और इस तकनीक का प्रयोग करें।

इस आर्टिकल को **YouTube** चैनल पर देखने के लिए **QR** कोड स्कैन करें।
या **https://youtu-be/FsF3aLw&df4** लिंक द्वारा भी देख सकते हैं।

प्रकाश संशोधक (लाइट मॉडिफायर्स) और फोटोग्राफी में उनका महत्त्व

फोटोग्राफी में प्रकाश संशोधक (लाइट मॉडिफायर्स) की गुणवत्ता और महत्व को बता रही हैं, भारत में फोटोग्राफी में पीएच.डी. प्राप्त करने वाली पहली महिला, लिम्का बुक और इंडिया बुक रिकॉर्ड होल्डर एवं एमिटी यूनिवर्सिटी लखनऊ में असिस्टेंट प्रोफेसर

डॉ. तूलिका साहू

फोटोग्राफी प्रकाश के बिना अस्तित्व विहीन है। फ़ोटोग्राफी में अच्छी प्रकाश व्यवस्था अच्छी तस्वीर के लिए एक महत्वपूर्ण शर्त है। एक बुरी तरह से रोशन तस्वीर, चाहे उसका विषय कितना भी सुंदर क्यों न हो, कभी भी प्रभावशाली नहीं हो सकती।

किसी दृश्य के विभिन्न हिस्सों से परावर्तित प्रकाश की विभिन्न मात्राओं को कैप्चर करके एक फोटोग्राफिक इमेज बनाई जाती है। गहरे रंग कि वस्तुएं प्रकाश के अधिक भाग को अवशोषित करती हैं जिससे कैमरे में कम प्रकाश परावर्तित होता है, जबकि हलके रंग कि वस्तुएं कैमरे में अधिक प्रकाश को परावर्तित करती हैं। परावर्तन (रिफ्लेक्शन) की यही अलग अलग मात्रा तस्वीर में प्रकाश और छाया उत्पन्न करके कंट्रास्ट पैदा करती है।

प्रकाश को कैसे देखना है, यह जानना एक फोटोग्राफर का एक मूल और महत्वपूर्ण गुण है। लेकिन यह सीखने की सबसे कठिन और सबसे अधिक समय लेने वाली प्रक्रिया भी है। प्रकाश में कई बुनियादी गुण होते हैं जो मूल रूप से एक तस्वीर को प्रभावित करते हैं। उनमें तीव्रता, रंग, गुणवत्ता और प्रकाश की दिशा शामिल है।

किसी भी विषय के लिए आदर्श प्रकाश व्यवस्था जैसी कोई चीज नहीं होती। प्रत्येक फोटोग्राफिक कम्पोजीशन अपनी अलग विशेषता के साथ प्रकाश की विभिन्न व्यवस्थाओं (लाइट सेटअप्स) की मांग करता है। एक ही फोटोग्राफिक कम्पोजीशन को यदि आप अलग-अलग लाइट सेटअप्स के साथ खींचते हैं, तो आपको सौंदर्य और अर्थ (मीनिंग) दोनों के संदर्भ में हर बार एक पूरी तरह से अलग तस्वीर मिलेगी।

इस सन्दर्भ में एक फोटोग्राफर को प्राकृतिक और कृत्रिम दोनों प्रकार के प्रकाश को देखना और नियंत्रित करना सीखना चाहिए। यह अच्छे कम्पोजीशन के अलावा सुंदर फोटोग्राफ्स खींचने का एकमात्र तरीका है। हालाँकि प्राकृतिक प्रकाश को नियंत्रित करने के लिए एक फोटोग्राफर के पास बहुत सीमित विकल्प होते हैं और काफी हद तक उसे बस प्रकाश के अनुकूल होकर कार्य करना होता है, वहीं कृत्रिम प्रकाश स्रोतों के गुणों को प्रभावित करने के फोटोग्राफर्स के पास लगभग अंतहीन तरीके हैं। प्राकृतिक प्रकाश पर कृत्रिम प्रकाश स्रोतों का प्रमुख लाभ यह है कि आप उन्हें पूरी तरह से अपने नियंत्रण में रख सकते हैं, यह आपको उन विषयों पर भी काम करने की स्वतंत्रता देता है जिनपर प्राकृतिक प्रकाश में काम करना लगभग असंभव हो जाता।

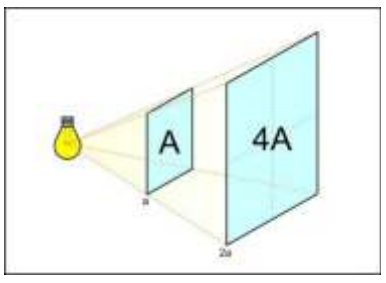

कृत्रिम प्रकाश स्रोत की तीव्रता पर कण्ट्रोल तथा सब्जेक्ट से लाइट की दूरी और परावर्तन को समझ कर तथा आवश्यकतानुसार लाइट मॉडिफिएर्स के प्रयोग से इच्छित रिजल्ट प्राप्त किया जा सकता है।

लाइट मॉडिफायर्स प्रकाश को नियंत्रित करते हैं या बदल भी देते हैं। कुछ उपकरण फोटो में सॉफ्ट छाया प्राप्त करने के लिए प्रकाश को सॉफ्ट करते हैं, वहीं अन्य फोटो में ड्रामा क्रिएट करने के लिए प्रकाश को कठोरता भी प्रदान करते हैं। कुछ अन्य परिस्थितियों में ये उपकरण प्रकाश को खास रंग या आकार देकर फोटोग्राफर्स को प्रकाश पर अधिक रचनात्मक नियंत्रण रखने की सुविधा देते हैं। यह निम्नलिखित तरह के होते हैं -

- **सॉफ्ट लाइट मॉडिफायर्स (संशोधक)**
- **डायरेक्शनल और हार्ड लाइट मॉडिफायर्स (संशोधक)**
- **क्रिएटिव लाइटिंग मॉडिफायर्स (संशोधक)**
- **ऑन-कैमरा फ़्लैश लाइट मॉडिफायर्स (संशोधक)**

फोटोग्राफी अम्ब्रेला, सॉफ्टबॉक्स, ब्यूटी डिशेस इत्यादि सॉफ्ट लाइट मॉडिफायर्स है। जबकि फ़्लैश लाइट्, स्ट्रोब लाइट, ग्रिड्स, स्नूट, बार्न डोर्स और फ्लैग्स इत्यादि हार्ड लाइट मॉडिफायर्स के अंतर्गत आते हैं। इन दोनों से इतर कुछ प्रकाश संशोधक ऐसे भी हैं जो न तो प्रकाश के प्रसार को नियंत्रित या प्रकाश के प्रभाव को मंद करते हैं, बल्कि वे प्रकाश में एक रचनात्मक प्रभाव उत्पन्न करने के लिए डिज़ाइन किये गए हैं। इन संशोधकों में जैल, गोबोस और पैटर्न शामिल हैं। ऑन-कैमरा फ्लैश के साथ उपयोग करने के लिए विशेष रूप से फ्लैश डिफ्यूज़र डिज़ाइन किए गए हैं, जिनमे कैप डिफ्यूज़र, डोम डिफ्यूज़र, बाउंस डिफ्यूज़र, फ्लैश बेंडर इत्यादि आते है।

सॉफ्ट लाइट मॉडिफायर्स (संशोधक)

1. फ़ोटोग्राफ़ी अम्ब्रेला (छतरियां)

फ़ोटोग्राफ़ी अम्ब्रेला (छतरियां) प्रकाश के क्षेत्रफल को बढ़ाकर रोशनी को सॉफ्ट करने में मदद करते हैं। उपयोग व परिवहन दोनों में आसान और कीमत में सस्ती होने के कारण ये फोटोग्राफर्स के बीच काफी लोकप्रिय हैं। मगर अपने आकार की वजह से इनका प्रयोग कभी-कभी असुविधाजनक भी हो सकता है। प्रकाश का अनियंत्रित प्रसार, छितराव और बैकग्राउंड पर बनने वाली परछाईं इसकी कुछेक कमियां भी हैं।

फ़ोटोग्राफ़ी छतरियों के तीन मुख्य प्रकार हैं -

I. डिफ्यूजन छतरियाँ (Diffusion Umbrella)
II. परावर्तक छतरियाँ (Reflective Umbrella)
III. कनवर्टिबल छतरियाँ (Convertible Umbrella)

डिफ्यूजन छतरियाँ (Diffusion Umbrella)

इन्हे शूट थ्रू अम्ब्रेला भी कहा जाता है, जो प्रकाश को फैला कर उसकी तीव्रता को घटाता है। डिफ्यूजन अम्ब्रेला को इस्तेमाल करते समय प्रकाश स्रोत को विषयवस्तु की तरफ रखा जाता है और ये ध्यान रखना होता है की छाता प्रकाश और विषय के बीच में रहे। अम्ब्रेला में प्रयोग होने वाला कपडा सफ़ेद, पारभासी होता है, जिससे होकर विषय तक पहुँचने वाला प्रकाश अपनी तीव्रता खो कर विषय में मृदुल छाया उत्पन्न करता है। किन्तु इस अम्ब्रेला से बिखरने वाले प्रकाश को नियंत्रित करना कभी कभी मुश्किल हो सकता हैं।

परावर्तक छतरियाँ (Reflective Umbrella)

परावर्तक अम्ब्रेला में प्रकाश स्रोत को विषय से विपरीत दिशा में रखा जाता है, लाइट अम्ब्रेला से, जो कि अंदर से सामान्यतया सफ़ेद या सिल्वर कलर तथा बाहर से काले रंग का होता है, परावर्तित होकर सब्जेक्ट तक पहुंचती है। यूँ तो दोनों ही तरह कि छतरियां प्रकाश को सॉफ्ट करने

का कार्य करती हैं, मगर परावर्तक अम्ब्रेला प्रकाश को कम छितरा कर उसके प्रयोग पर फोटोग्राफर को अधिक नियंत्रण प्रदान करता है।

कनवर्टिबल छतरियाँ (Convertible Umbrella)

कनवर्टिबल (convertible) अम्ब्रेला तीसरे प्रकार कि छतरी है जिसमे एक काले कवर के प्रयोग से डिफ्यूजन अम्ब्रेला को रिफ्लेक्टिव अम्ब्रेला में आसानी से बदला जा सकता है।

2. सॉफ्टबॉक्स

सॉफ्टबॉक्सेस भी अम्ब्रेला कि तरह ही प्रकाश को डिफ्यूज करने के काम आते हैं। अलग-अलग आकार और माप में उपलब्धता और अम्ब्रेला के मुकाबले प्रकाश पर अधिक नियंत्रण इसे फोटोग्राफर्स के बीच अधिक लोकप्रिय बनाता हैं, मगर अम्ब्रेला के मुकाबले सॉफ्टबॉक्स महंगा तथा सेटअप करने की दृष्टि से कठिन साबित हो सकता है।

सॉफ्टबॉक्सेस ऑक्टाबॉक्स, चौकोर, स्ट्रिप, या आयताकार आकार में आते हैं, जिनका प्रयोग विषय पर प्रकाश की आवश्यकतानुसार किया जाता हैं।

कुछ मॉडल्स में लाइट डिफ्यूजन की अलग मात्रा प्राप्त करने के लिए डिफ्यूजन पैनल के बदलने की भी सुविधा होती हैं।

एक आदर्श सॉफ्टबॉक्स 2 फ़ीट से 4 फ़ीट के बीच का होता है।

सॉफ्टबॉक्सेस की विभिन्न आकृतियाँ पोर्ट्रेट में कैचलाइट के प्रकार तथा विषय वस्तु पर प्रकाश के क्षेत्रफल का भी निर्धारण करती हैं।

3. ब्यूटी डिश

ब्यूटी डिश एक फोटोग्राफिक लाइटिंग मॉडिफायर है, जो विषय के केंद्र बिंदु की ओर प्रकाश को वितरित करने के लिए एक परवलयिक परावर्तक का उपयोग करता है। इसका सर्वाधिक प्रयोग प्रकाश को केंद्रीयकृत करने के लिए किया जाता हैं। ब्यूटी डिश के प्रयोग से गहरी छाया प्राप्त होती हैं। इससे मिलने वाले प्रकाश की तीव्रता डायरेक्ट फ़्लैश और सॉफ्टबॉक्स के बीच की होती है, जिससे छवि प्रकाश में लिपटी हुई सी लगती हैं। प्रकाश और छाया का कंट्रास्ट फोटोग्राफ में अधिक नाटकीय प्रभाव जोड़ता है।

सामान्यतया ब्यूटी डिश का उपयोग पोर्ट्रेट और फैशन फोटोग्राफी में किया जाता है, किन्तु स्पोर्ट्स फ़ोटोग्राफ़ी में भी प्रचुर मात्रा में ब्यूटी डिश का प्रयोग उन्हीं कारणों किया जाता है जिन कारणों से इसका उपयोग पोर्ट्रेट और फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में होता है।

स्पोर्ट्स फ़ोटोग्राफ़ी में ब्यूटी डिश मॉडल की मांसपेशियों और बनावट को निखारने और उजागर करने में सहायता देती है। यूँ तो ये विभिन्न मापों में उपलब्ध हैं पर इसका सबसे लोकप्रिय आकार डेढ़ से दो फीट के आसपास है।

4. स्क्रिम

तकनीकी रूप से, एक स्क्रिम एक प्रकाश संसोधक उपकरण है जिसे रोशनी के स्रोत और विषय के बीच रखा जाता है जो प्रकाश की गुणवत्ता को बदले बिना प्रकाश की मात्रा को कम करता है।

STUDIO NEWS
लखनऊ, शनिवार, 6 जून 2020 से 5 जुलाई 2020

फोटोग्राफी की समझ आपको खुद को समझने की सीमा तक सीमित है। -- अर्नेस्ट हास

स्क्रिम फ्रेम पर फैला हुआ महीन जालीदार कपडे का एक काफी बड़ा पैनल होता है जो प्रकाश को डिफ्यूज करता है। हॉट लाइट में प्रयुक्त होने के लिए मेटल की जाली वाले स्क्रिम्स प्रयोग में लाये जाते हैं ताकि ये गर्मी से जल न जाएं। जहाँ ब्यूटी डिशेस, छतरियां, और सॉफ्टबॉक्स का उपयोग आमतौर पर कृत्रिम प्रकाश व्यवस्था के साथ किया जाता है। स्क्रिम्स का प्रयोग कृत्रिम और प्राकृतिक प्रकाश दोनों के साथ आसानी से किया जा सकता है।

स्क्रिम्स आम तौर पर बहुत बड़े और महंगे होते हैं इसलिए उनका आकार और लागत उन्हें नए फ़ोटोग्राफ़रों के लिए कम सुलभ बनाती है।

5. परावर्तक (रिफ्लेक्टर्स)

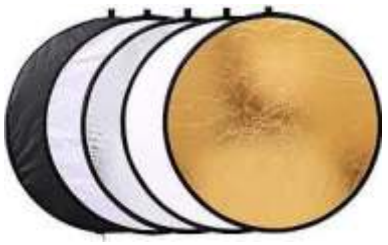

परावर्तक ऐसा उपकरण है जो मौजूदा प्रकाश को पुनर्निर्देशित करने के साथ साथ उसकी तीव्रता भी घटाता है।

आउटडोर शूटिंग में रिफ्लेक्टर्स बेहद शक्तिशाली उपकरण साबित होते हैं और जब सही तरीके से उपयोग किया जाता है, तो उन्हें मुख्य प्रकाश स्रोत के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है, जबकि ध्यान देने योग्य बात ये हैं कि रिफ्लेक्टर्स अन्य कृत्रिम /प्राकृतिक प्रकाश स्रोतों की तरह प्रकाश पैदा नहीं करते।

दीवार, दर्पण, कार्डबोर्ड, स्टायरोफोम, एल्यूमीनियम पन्नी, आदि वस्तुओं को भी प्रकाश परावर्तक की तरह प्रयुक्त किया जा सकता हैं।

डायरेक्शनल और हार्ड लाइट संशोधक (मॉडिफायर्स)

ग्रिड, स्नूट, बार्न डोर्स और फ्लैग जैसे संशोधक प्रकाश को सॉफ्ट नहीं करते हैं। वे सब्जेक्ट या विषयवस्तु पर प्रकाश को केंद्रित, दिशा निर्देशित (direct) एवं नियंत्रित करने में फोटोग्राफर्स की मदद करते हैं।

1. ग्रिड

फोटोग्राफर की लाइटिंग किट में ग्रिड जाल की तरह का एक उपकरण है जिसे प्रकाश स्रोत के ऊपर फिट कर दिया जाता है। जो प्रकाश को एक खास क्षेत्र तक केंद्रित व सीमित रखकर विषय पर स्पॉटलाइट जैसा प्रभाव प्रदान करने में मदद करता है। कभी-कभी ग्रिड का उपयोग हेयर लाइट या बैकलाइट के रूप में भी किया जाता है।

ग्रिड को आमतौर पर अन्य प्रकाश संशोधकों के साथ प्रयोग करने के लिए डिज़ाइन किया जाता है। यदि आप पूरे विषय वस्तु को रोशन करना नहीं चाहते हैं, तो ग्रिड एक अच्छा विकल्प है। ग्रिड अलग-अलग डिग्री में भी आते हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि प्रकाश कितनी दूर तक फैलेगा। 10 डिग्री ग्रिड एक संकीर्ण प्रकाश किरण बनाता है, जबकि 40 डिग्री ग्रिड में प्रकाश फैला हुआ होता है। ग्रिड की डिज़ाइन के अनुसार उन्हें अलग अलग नाम भी दिए गए हैं, जैसे हनी कोंब ग्रिड इत्यादि।

2. स्नूट

स्नूट ट्यूब के आकर का एक प्रकाश संशोधक है जो स्पॉटलाइट बनाता है। स्नूट प्रकाश स्रोत को और भी छोटे प्रकाश स्रोत में बदलकर प्रकाश के फैलाव को सीमित तथा प्रकाश की तीव्रता को कठोरता प्रदान करता है।

फोटोग्राफर्स अक्सर छवि के एक विशिष्ट हिस्से या डिटेल्स को हाईलाइट करने के लिए स्नूट्स का उपयोग करते है।

स्नूट की खरीदारी करते समय, आपको यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता होगी कि स्नूट आपके लाइटिंग गियर के अनुकूल हो क्योंकि स्नूट को अलग अलग प्रकाश स्रोतों के हिसाब से अलग तरह से डिज़ाइन किया जाता है।

3. बार्न डोर्स

बार्न डोर्स एक सामान्य प्रकाश संशोधक हैं। इनका बहुतायत में प्रयोग मंच लाइटिंग के लिए किया जाता रहा है। इस संशोधक में चार दरवाजे होते हैं जो प्रत्येक तरफ से प्रकाश स्रोत को घेरते हैं।

उन दरवाजों की स्थिति को समायोजित करके, आप प्रकाश के फैलाव को नियंत्रित कर सकते हैं। यदि आप सभी चार दरवाजों को कसकर बंद करते हैं, तो आप एक स्नूट की तरह प्रकाश की एक संकीर्ण किरण बना सकते हैं।

क्योंकि काम करने के लिए चार दरवाजे हैं, प्रकाश को अपनी आवश्यकतानुसार अनुकूलित करना आसान है। आप प्रकाश की एक क्षैतिज या ऊर्ध्वाधर पट्टी बना सकते हैं, सभी डोर्स को बंद कर सकते हैं, या बस कोई एक दरवाज़ा भी बंद कर सकते हैं।

बार्न डोर्स फोटोग्राफर्स को प्रकाश पर बहुत अधिक नियंत्रण प्रदान करते हैं। स्नूट्स की तरह, बार्न डोर्स को भी अलग अलग प्रकाश स्रोतों पर फिट होने के लिए विशेष तौर पर डिज़ाइन किया जाता है।

4. फ्लैग्स

डिफ्यूज़र और रिफ्लेक्टर की तरह फ्लैग्स एक उपकरण है जिसका उपयोग प्रकाश को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है। जबकि डिफ्यूज़र प्रकाश की आकृति और कोमलता को नियंत्रित करते हैं, और रिफ्लेक्टर आकार, तीव्रता और दिशा (अक्सर एक अतिरिक्त प्रकाश स्रोत के रूप में कार्य करते हैं) को नियंत्रित करते हैं, फ्लैग्स फोटोग्राफर को अपने दृश्य से प्रकाश को हटाने या अवरूद्ध करने की क्षमता देते हैं।

प्रकाश को एक विशेष प्रभाव देने के साथ ही फ्लैग्स का एक व्यावहारिक उद्देश्य भी है; कभी कभी कैमरे में सामने से लाइट आ रही हो तब फ्लेयर से बचाने के लिए फ्लैग्स को प्रकाश स्रोत और कैमरे के बीच रखा जा सकता है।

क्रिएटिव लाइटिंग मॉडिफिएर्स (संशोधक)

इन संशोधकों में जैल, गोबो, पैटर्न और कुकुलोरिस को शामिल हैं जो न तो प्रकाश के प्रसार को नियंत्रित करते या प्रकाश के प्रभाव को मंद करते हैं, बल्कि वे प्रकाश में एक रचनात्मक प्रभाव उत्पन्न करने के लिए डिज़ाइन किये गए हैं।

1. जैल

जैल एक कम खर्चीली रंगीन सामग्री है जिसे प्रकाश के रंग को बदलने के लिए प्रकाश के ऊपर रखा जाता है।

आप दृश्य के मौजूदा प्रकाश में इच्छित कलर टेम्परेचर का प्रभाव प्रदर्शित करने लिए जैल का सहारा ले सकते हैं। रचनात्मक प्रभावों के लिए बिना बल्ब के रंग को बदले आप कम्पोजीशन पर मनचाहे रंगों का प्रकाश डाल सकते हैं या फिर जैल के उपयोग से सफ़ेद बैकग्राउंड को रंगीन बैकग्राउंड में बदल सकते है।

जैल का प्रयोग करते समय वाइट बैलेंस को सटीकता से प्रयोग करने में समस्या आ सकती है।

2. गोबो और पैटर्न

गोबो का अर्थ 'गो-बिटवीन- ऑब्जेक्ट' है, और यह केवल एक प्रकाश संशोधक है जो फोटोग्राफर के प्रकाश स्रोत और उसके विषय के बीच जाता है। यह एक स्टैंसिल कट हो सकता है जिसे सीधे प्रकाश स्रोत पर फिट किया जा सके या यह एक फ्रीस्टैंडिंग ऑब्जेक्ट भी हो सकता है। एक गॉबो प्रकाश को अवरूद्ध कर सकता है, इसे फैला सकता है या इसे रंग दे सकता है।

वहीं एक पैटर्न लाइनों या आकृतियों की एक व्यवस्था है, विशेष रूप से एक डिजाइन जिसमें किसी सतह पर एक ही आकार एक निश्चित दूरी पर दोहराया जाता है। पैटर्नस का प्रयोग दृश्य को रचनात्मकता प्रदान करता है। कुछ फ़ोटोग्राफ़र फोम कोर या गैफर्स टेप की मदद से अपने पैटर्न खुद भी बनाते हैं।

3. कुकुलोरिस (कुकी या कू-को)

कुकुलोरिस को कुकी या कू-को भी कहते हैं व ये फोटोग्राफिक विषय पर डाले जाने वाले प्रकाश में बनावट पैदा करके छाया और प्रकाश का एक पैटर्न डालने का उपकरण है।

कुकुलोरिस लकड़ी की एक शीट या बोर्ड होता है जिसमें मनचाहे छेद काटे जाते हैं। फोटोग्राफर बोर्ड को एक प्रकाश स्रोत के सामने रखता है और बोर्ड में छिद्रों द्वारा बनाई गई छाया और प्रकाश का एक पैटर्न पेश करता है जो इसे सॉफ्ट बॉक्स जैसे बड़े प्रकाश स्रोतों के साथ भी काम करने में सहज बनाते हैं।

ऑन-कैमरा फ़्लैश संशोधक

ऑन-कैमरा फ्लैश के साथ उपयोग करने के लिए विशेष रूप से फ्लैश डिफ्यूज़र डिज़ाइन किए गए हैं, ये डिफ्यूज़र आकर में बहुत-बहुत छोटे होते हैं। वे ऑफ-कैमरा फ्लैश पर इस्तेमाल किये जाने वाले अम्ब्रेला का मुकाबला नहीं कर सकते किन्तु ऑन-कैमरा नंगे फ्लैश से शूट के मुकाबले इनसे मिलने वाला प्रभाव बेहतर होता है।

लोकप्रिय फ़्लैश डिफ्यूज़र-

1. कैप डिफ्यूज़र

कैप डिफ्यूज़र प्रकाश को बहुत नरम नहीं करता है। वे सस्ते हैं और प्रकाश में बिना अधिक बदलाव के फोटोग्राफ को बेहतर बनाते हैं।

2. डोम डिफ्यूज़र

डोम डिफ्यूज़र, कैप डिफ्यूज़र के विपरीत, प्रकाश की सतह को बढ़ा कर प्रकाश को और सॉफ्ट कर देते हैं। मैगमॉड (MagMod), मैग स्फीयर (MagSphere) और गैरे फोंग लाइटस्फीयर (Gary Fong Lightsphere) बिना बड़े लाइट मोडोफिएर के प्रकाश को सॉफ्ट करने में मदद करते हैं।

3. बाउंस डिफ्यूज़र

ये लाइटिंग मॉडिफ़ायर प्रकाश के साधारण डिफ्यूज़न की बजाय लाइट को उछाल कर उसमे सॉफ्ट प्रभाव पैदा करते हैं। बाउंस डिफ्यूज़र में मैगमॉड (MagMod), मैग बाउंस (MagBounce) और वेल्लो यूनिवर्सल बाउंस डिफ्यूजर (Vello Universal बाउंस Diffuser) जैसे विकल्प शामिल हैं।

4. फ्लैश बेंडर

रूज फ्लैश बेंडर (The Rouge Flash Bender) प्रकाश संशोधक कि एक अलग श्रेणी है। यह एक लचीला पैनल है जिसे आप अपनी आवश्यकतानुसार आकार दे सकते हैं। फ्लैश बेंडर को बाउंस डिफ्यूज़र के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। आप इससे एक स्नूट का काम भी ले सकते हैं।

(डिस्क्लेमर – इस लेख में प्रयुक्त छवियां इंटरनेट से ली गयीं हैं जिनका उद्देश्य सिर्फ शैक्षिक हैं, व्यावसायिक नहीं।)

फूड फोटोग्राफी के ट्रेंड्ज़

स्मिता श्रीवास्तव
फूड स्टाइलिस्ट एडं फोटोग्राफर

Pic 1

Pic 2

Pic 3

फूड फोटोग्राफी का इतिहास बहुत पुराना है, अपने शुरूवाती दौर से डिजिटल एरा तक के सफर में कई परिवर्तनों से होते हुए आज फोटोग्राफी की यह शैली सोशल नेटवर्किंग और फूड इंडस्ट्री का अहम अंग बन चुकी है। लेटेस्ट ट्रेंड्स को जानने से पहले, फूड फोटोग्राफी के इतिहास को जानना इस इंडस्ट्री में आये बदलावों को समझने में मदद करेगा।

हममे से कई लोगों को लगता होगा कि फूड फोटोग्राफी की शुरूवात शायद विज्ञापन जगत और रेस्टोरेंट कल्चर की लोकप्रियता के साथ हुई होगी परन्तु असल में फूड फोटोग्राफी की शुरूवात 1845 में विलियम हेनरी फॉक्स टैलबोट द्वारा ली गयी कुछ आडू और अनानास की फोटोग्राफ - 'अ फ्रूट पीस' द्वारा हुई थी। पिछली शताब्दी तक जहाँ फूड फोटोग्राफी मात्र कलात्मक स्टिल लाइफ तक सीमित थी वही 19वीं शताब्दी के शुरूवाती दौर से इसमें कई बदलाव आये। 1930 के दौरान विज्ञापन जगत के बढ़ते कदम और 1940 के दौर में पैकेज्ड फूड्स, कुकबुक्स और मैगजीन्स की तेज़ी सी बढ़ती डिमांड ने फूड फोटोग्राफी के प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। खाद्य पदार्थो के रेखाचित्रों की जगह ब्लैक एंड वाइट फोटोग्राफ्स लेने लगी और 1950 के दशक तक आते-आते फूड की कलर फोटोज ने तो विज्ञापन जगत में मानो तूफ़ान सा ला दिया। आज की तुलना में भले ही उस दौर की हार्श लाइट में खींची गयी पिक्चर्स बहुत भरी हुई, ओवर सैचुरेटेड रंगो वाली लगें परन्तु उस दौर में वह बहुत लोकप्रिय हुई। जहाँ 1950-60 के दौरान वाइड एंगल और फूड्स से भरी हुई टेबल्स को दिखाया जाता था वही 70 के दशक के फूड फोटोज में इम्प्रेशनिस्ट पेंटिंग्स जैसा प्रभाव था। 1980-90 के दौरान इस शैली में काफी बदलाव आये - सॉफ्ट रोमांटिक लाइट, शैलो एंगल और खूबसूरत प्रॉप्स का काफी इस्तेमाल होने लगा, सफ़ेद क्राकरी और हल्के या पस्टेल रंगो के बैकग्राउंड भी इस दौर में काफी लोकप्रिय हुए।

90 के दशक में शुरू हुई डिजिटल फोटोग्राफी और इंटरनेट एरा ने फूड फोटोग्राफी में क्रांति ला दी। ब्लॉगिंग और बढ़ते फूड कल्चर ने वाइट स्पेस, छोटी सर्विंग साइज, सॉफ्ट डिफ्फुसेड लाइट और शैलो अपर्चर के साथ-साथ क्लीन लाइन्स, फूड क्लोज़अप और कलात्मक एंगल्स को भी काफी महत्त्व दिया। 2010 के आते-आते फूड एक कल्चर सा बन गया और फोटोग्राफी उसकी रंग बिरंगी कलात्मक भाषा।

इंस्टाग्राम और दूसरे पिक्चर शेयरिंग प्लेटफॉर्म्स ने फूड फोटोग्राफी को एक नयी दिशा दे दी है जिसके चलते इस कला में कई नए प्रयोग परस्पर होते आ रहे हैं।

निम्न लिखित ट्रेंड्स पिछले कुछ समय में फूड फोटोग्राफी में काफी लोकप्रिय हुए हैं -

फूड में ज़्यादा रंगो का इस्तेमाल (Pic 1)

ताज़ी रंगबिरंगी सब्ज़ियाँ और प्राकृतिक रंगो से भरपूर खाद्य पदार्थ जहाँ फूड इंडस्ट्री में काफी लोकप्रिय रहे हैं वहीं कुछ सालो से रंगबिरंगी क्राकरी, बैकग्राउंडस और प्रॉप्स का भी प्रचलन बढ़ा है। कंट्रास्ट रंगो के इस्तेमाल के साथ-साथ टर्शरी और अनलॉगस कलर स्कीम और एक ही कलर के टिंट्स, शेड्स और टोन्स का इस्तेमाल भी काफी लोकप्रिय हुआ है (रंगो के बारे में डिटेल में पढ़ने के लिए दिसंबर'19 का आर्टिकल पढ़ें)

लोकप्रिय न्यूट्रल कलर्स (Pic 2)

इन कुछ वर्षो में फूड फोटोग्राफी में न्यूट्रल कलर स्कीम्स के प्रति लोकप्रियता काफी देखने को मिली है। सफ़ेद, काले, सिलेटी और भूरे रंगो को फूड फोटोग्राफी और स्टाइलिंग में बहुत पसंद किया जाने लगा है। इन रंगो के बैकग्राउंड और प्रॉप्स खाने के प्राकृतिक रंगो को न सिर्फ आसानी से उभारते हैं बल्कि सही लाइट के प्रयोग से पिक्चर में वार्मथ या कूलनेस का भी आभास देते हैं।

फूड एक्सपीरियंस (Pic 3)

आज के समय में फूड सिर्फ भोजन नहीं है बल्कि अपने आप मे एक एक्सपीरियंस भी है जिसके चलते फूड के डिटेल्स और टेक्सचर के साथ-साथ अक्सर पिक्चर में रेस्टोरेंट या कैफ़े की बैकग्राउण्ड, शैलो डेप्थ ऑफ फील्ड का प्रयोग करके इस्तेमाल की जाती है। किसी ख़ास क्षेत्र की रेसिपी में एक्सपीरियंस फैक्टर ऐड करने के लिए अक्सर उस जगह से रिलेटेड सामान या उस रेसिपी में प्रयोग हुई स्थानीय फल सब्ज़ियों को भी प्रॉप्स की तरह इस्तेमाल किया जाता है।

वाइट स्पेस और मिनमिलिस्म (Pic 4)

एम्प्टी स्पेस या पैसिव स्पेस के नाम से भी जानी जाने वाली यह वाइट स्पेस चित्र में कलात्मक ढँग से छोड़ी गयी खाली जगह होती है जो चित्र को हल्कापन देती है और फूड की तरफ ज़्यादा ध्यान खींचती है। ठीक इसी तरह मिनिमिलिस्म का अर्थ है फ्रेम में कम से कम सामान रख कर उसे आकर्षक बनाना।

ह्यूमन एलिमेंट इन फूड (Pic 5)

पिछले कुछ सालो से पिक्चर में किसी इंसान की मौजूदगी उसके हाथो द्वारा दर्शाना काफी पसंद किया गया है। ह्यूमन एलिमेंट का इस्तेमाल न सिर्फ पिक्चर में वास्तविकता डालता है बल्कि दर्शक को उस पिक्चर से तुरंत कनेक्ट कर देता है।

टॉप एंगल (Pic 6)

ओवरहेड एंगल या इंस्टा एंगल के नाम से प्रचलित यह पिक्चर एंगल इस दौर की फूड फोटोग्राफी का सबसे लोकप्रिय एंगल है। ऊँचाई से पिक्चर लेने की वजह से यह एंगल वाइड कवरेज के साथ-साथ फ्रेम में रखी सभी चीज़ों को बड़ी खूबसूरती से दर्शा के दर्शक को कहानी बुनने का मौका देता है। इस एंगल को इस्तेमाल करते समय कलर और कम्पोजीशन का काफी ख्याल रखना चाहिए ताकि पिक्चर में रखी सारी चीज़ों पर अच्छे से ध्यान जाये।

क्रिएटिव लाइटिंग (Pic 7)

सॉफ्ट लाइट के साथ-साथ हार्ड कन्ट्रास्टी लाइट और डार्क शैडो भी आजकल बड़े लोकप्रिय हो गए हैं और पिक्चर में क्रिएटिव लुक देने के लिए काफी उपयोग किये जाते हैं।

फूड फोटोग्राफी का मकसद है फूड की खूबसूरती बढ़ाना। उपरोक्त ट्रेंड्स को फॉलो करके आप अपनी तस्वीरो को बेहतर बना सकते हैं।

Pic 4

Pic 5

Pic 6

Pic 7

STUDIO NEWS
लखनऊ, शनिवार, 6 जून 2020 से 5 जुलाई 2020

फोटोग्राफी में खेल की तरह कोई नियम नहीं होते, सिर्फ अंत में परिणाम ही मायने रखता है। -- बिल ब्रैंट

कल क्या होगा किसको पता

बड़ी सफलता पाने के लिए खुद को क्या करना पड़ेगा? इसी फलसफे को बताता आनन्द कृष्ण लाल का आलेख

जी हाँ आज का मेरा लेख उन लोगों के लिए है जो आजकल की परिस्थिति के चलते इस असमंजस में हैं कि आने वाले कल को क्या होगा। कोरोना वायरस या कोविड-19 महामारी के कारण सभी का काम डिस्टर्ब हुआ है और बहुत सारे लोग इस बात से परेशान हैं कि आगे आने वाले समय में ऊँट किस करवट बैठेगा। ये बात स्पष्ट कर दूँ कि आज का मेरा ये लेख अपने प्यारे फोटोग्राफर बंधुओं के लिए समर्पित है। जैसा कि मुझे सब तरफ दिखाई दे रहा है और आप सब भी इस बात के गवाह हैं कि इस महामारी में फिजिकल डिस्टैंसिंग और अन्य सावधानियों के चलते फिलहाल भविष्य में होने वाले वैवाहिक और अन्य कार्यक्रम बहुत कम होंगे और जो होंगे वो भी सीमित लोगों के साथ। जो कुछ भी होगा वो सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देश के अनुसार ही होगा। इस बदलाव का फोटोग्राफर मित्रों के व्यवसाय पर बहुत गहरा असर पड़ा है। बदलती हुई तकनीकी और मार्केट की नयी-नयी मांग के चलते हमारे बहुत से साथियों ने समय-समय पर अपने व्यवसाय में नए-नए इक्विपमेंट्स में बहुत सा पैसा इन्वेस्ट कर दिया है। ये पैसा किसी भाई ने अपनी जमापूंजी से तो किसी ने क़र्ज़ लेकर भी लगाया है। अब समस्या सामने है कि यदि काम करके पैसा नहीं कमाया गया तो इस पैसे या क़र्ज़ की वापसी कैसे होगी। और जब शादी-ब्याह, जो फायदा दिलाने वाला इस व्यवसाय का मुख्य कार्य है, जब शुरू भी होगा तब भी करने के लिए इतना काम होगा क्या? ये सब वो और इस जैसे बहुत से सवाल हैं जो फोटोग्राफर भाइयों के दिमाग में दिन-रात घूम रहे हैं। ये भी पता चला कि कुछ दोस्त अपना व्यवसाय बदलने की सोच रहे हैं। ये सब विचार आज की स्थितियों-परिस्थितियों को देखते हुए संभव भी है। तो क्या कोई रास्ता भी है जो इस सब परिस्थितियों से बाहर का रास्ता दिखा सके? क्या हमें सब कुछ किसी और नज़रिये से देखना पड़ेगा? जी हाँ! हमें अपने सोचने का ढंग कुछ बदलना पड़ेगा और मार्केट के लिए अपने को बेहतर विकल्प देने के लिए तैयार करना होगा। अपना नजरिया बदलने का फायदा हम एक कहानी से समझने की कोशिश करेंगे।

बहुत समय पहले एक राज्य का एक राजा था जिसका नाम जगराज था। राजा अक्सर महल से बाहर जाता था तो हमेशा अपने घोड़े पर ही जाना होता था। एक बार उसके मन में विचार आया कि वो आज नगर में जब जनता से मिलने जायेगा और पैदल ही जाएगा न की घोड़े पर सवार हो कर। राजा जगराज अपने नगर को देखने एवं जनता की समस्याओं को सुनने के लिए पैदल ही भ्रमण पर निकला। बहुत पुरानी बात है और उस समय जूते नहीं होते थे इसलिए जमीन पर कंकड़ और पत्थरों के कारण राजा के पाँव दर्द करने लगे। राजा ने इस समस्या के हल के लिए अपने मंत्रियों की एक बैठक बुलाई। उनमें से ज्यादातर लोगों का यही सुझाव था कि क्यों न पूरे नगर के रास्ते को चमड़े की मोटी परत से ढक दिया जाए जिससे की चलने में होने वाली दिक्कत न हो। लेकिन जब हिसाब लगाया गया तो समझ में आया कि इसके लिए बहुत सारे धन एवं अन्य संसाधनों की जरूरत थी। तभी राजा के पास खड़े एक मंत्री ने सुझाव दिया कि पूरे नगर को चमड़े की परत से ढकने से अच्छा यह है कि क्यों न हम अपने पैरों को ही चमड़े की परत से ढक दें। इससे न केवल हमारे पैर सुरक्षित रहेंगे बल्कि ज्यादा धन भी खर्च नहीं होगा।

मंत्री का सुझाव सुनकर राजा प्रसन्न हुआ और उसने सभी के लिए "जूते" बनवाने का आदेश दिया। दोस्तों इस तरह नज़रिया बदलने से रास्ते निकल आते है।

अब आते हैं आपकी समस्या पर कि जब सब कुछ सामान्य होगा तब मार्केट किस तरह से सामने आएगा। मार्केट में जब तक सामान्य स्थितियां आ जाएं तब तक के समय में आप एक बार अपने सारे इक्विपमेंट्स के बारे में जानिये कि आपके पास जो कुछ है उसमें दिए गए फीचर्स से आप कितने परिचित हैं और कितना यूज़ टू हैं। हम सब अच्छे-अच्छे मोबाइल फ़ोन इस्तेमाल करते हैं पर यदि उसका ऑपरेशन मैनुअल पढ़ें तो पता चलेगा मोबाइल में ऐसे बहुत से फीचर्स हैं जिनके बारे में हम जानते नहीं या हम उन्हें उपयोग में नहीं लाते। इसी तरह से आपके पास तमाम तरह की लाइट्स, कैमरा और लेन्सेस आम तौर पर होते हैं। तो क्या जो लेंस आप यूज़ करते हैं उसके बारे में टेक्निकली आप सब जानते हैं या बस उतना जानते हैं जितना बेसिक फीचर्स से काम चल जाए। फोटोग्राफी के क्षेत्र में व्यस्तता ज़्यादा होने से समय नहीं निकल पाता कि हम बहुत से अच्छे फीचर्स को समझ पाएं। आपने पैसा तो भरपूर लगा दिया पर यदि अपने इक्विपमेंट्स को नहीं समझा या लाइट का इस्तेमाल उन इक्विपमेंट्स के साथ

अलग ढंग से करके कुछ नया क्रिएटिव नहीं किया तो आप भी आम आदमी की तरह से चल रहे हैं। मार्केट में यदि अपने को अच्छे लेवल पर ले जाना हैं तो कुछ और अच्छा करने की चाहत दिल में होनी चाहिए। समय-समय पर मेरी कई फोटोग्राफर्स से मुलाकात और बात होती है और उनके काम पर भी मैं नज़र रखता हूँ तो पाता हूँ कि उनमे से कुछ लोग आज भी वही क्वालिटी या क्रिएटिविटी दे रहे हैं जो पिछले सालों में देते आ रहे हैं। वहीं कुछ लोग ऐसे मिले जो इन लॉकडाउन के दिनों में अपनी इस कला को चमकाते मिले। अपने पास मौजूद कैमरा लेन्सेस और लाइट्स से तरह-तरह के प्रयोग करते रहे और जब मार्केट में काम चालू होगा तो ऐसे लोगों की क्रिएटिविटी सबसे आगे दिखाई देगी। आपको सलाह यही है कि इस दौरान अपने पास जो भी इक्विपमेंट्स हैं उसके नए-नए फीचर्स को जानें। वो कैमरे का पैकिंग बॉक्स जो आपने कहीं अलमारी में ऊपर सम्हाल कर रखा होगा, उसमें रखी हुई ऑपरेशन मैनुअल निकालिये और रिसर्च कर डालिये। सहायता के लिए इंटरनेट पर या यूट्यूब पर दी हुई सूचनाओं और वीडियो का सहारा लीजिये। पता करिये की दुनिया के नामचीन फोटोग्राफर्स कैसे अपना काम करते हैं। क्या कारण है कि उनका काम हज़ारों लाखों लोगों से ज़्यादा पसंद किया जाता है। लिमिटेड रिसोर्सेज में कैसे क्रिएटिविटी का इस्तेमाल करके अपने काम को सबसे अलग दिखाया जा सकता है। क्रिएटिविटी या रचनात्मकता की कोई सीमा नहीं है और हमेशा कुछ नया कर दिखाने की संभावना रहती है। दुनिया के महान मोटिवेशनल गुरू शिवखेड़ा जी ने अपनी किताब में लिखा कि 'सफल आदमी कुछ नया नहीं करते, बल्कि वो उसी काम को नए ढंग से करते हैं'। तो अपने ज्ञान चक्षु खोलिये और देखिये कि आप अपने काम में क्या नयापन डाल सकते हैं। और यदि आपके पास कुछ ऐसा नया और यूनिक है जो किसी और के पास नहीं है तो आप अपने क्लाइंट से मुहमांगे दाम ले सकते हैं। लिखते-लिखते एक विचार दिमाग में आया (शायद कोई कर भी रहा हो) कि आने वाले समय में होने वाले सांस्कृतिक, पारिवारिक, मांगलिक व अन्य कार्यक्रमों में अधिक लोगों की हिस्सेदारी नहीं हो पाएगी लेकिन ये लोग उस कार्यक्रम में शामिल होना चाहेंगे। तो क्या आपके पास ऐसी व्यवस्था की जा सकती है कि सारा कार्यक्रम चार या पांच कैमरों से ऑन स्पॉट मिक्स करके यूट्यूब या किसी और प्लेटफार्म पर लाइव स्ट्रीम किया जा सके, या कुछ ऐसा जिसमें लाइव स्ट्रीमिंग के साथ देखने वाले दर्शकों से इंटरेक्शन भी हो सके।

सोचिये कि स्टिल फोटोग्राफी में क्या वही एल्बम आप क्लाइंट को बना कर देंगे जो आपका लैब वाला बना कर देता है या आपके किसी क्रिएटिव इनपुट से वही एल्बम का डिज़ाइन एकदम अलग हो सकता है। डिफरेंट लाइटिंग या डिफरेंट एंगल्स से उन्हीं इक्विपमेंट्स से क्या आप कुछ नया दिखा सकते हैं दुनिया को। सब कुछ संभव है बस मन में मजबूत इच्छा शक्ति की आवश्यकता है। आपकी मदद के लिए स्टूडियो न्यूज़ परिवार हमेशा आपके साथ है। साथ ही यदि आप कुछ नया कर रहे हैं और दुनिया को दिखाना चाहते हैं तो सोशल मीडिया सबसे अच्छा जरिया है। फोटोग्राफी और तकनीकी को लेकर बहुत सारे वेब सेमीनार होते हैं उन्हें समय निकाल कर ज़रूर अटेंड कीजिये और दिखा दीजिये दुनिया को कि कल क्या-क्या आप कर सकते हैं।

स्टूडियो न्यूज़ तिमाही फोटो प्रतियोगिता

फोटोग्राफी में अपना नाम और पहचान बनाने के साथ-साथ उपहार पाने और स्टूडियो न्यूज में प्रकाशित होने का मौका। उठाइये अपना कैमरा, रचनात्मक तस्वीरें खींचे और हमें भेजें।

नियम :

1. फोटो केवल डिजिटल रूप में भेजनी है। फाईल का फार्मेट JPEG होना चाहिए।
2. फोटो कलर या B/W कोई भी हो सकती है।
3. फोटो का साइज 8x10 इंच में एवं 300 dpi की होनी चाहिए।
4. फोटो के ऊपर कोई वाटर मार्क या नाम नहीं लिखा होना चाहिए।
5. कम्पटीशन में अधिकतम 2 फोटो ही भेज सकते हैं।
6. प्रतिभागी अपनी फोटो के लिए स्वयं जिम्मेदार होगा। किसी दूसरे की फोटो होने पर स्टूडियो न्यूज जिम्मेदार नहीं होगा।
7. फोटोग्राफर अपनी पासपोर्ट साइज फोटो, पूरा पता एवं फोन नम्बर अवश्य भेजें अन्यथा उनकी फोटो प्रतियोगिता में शामिल नहीं की जायेगी।

प्रतियोगिता की अन्तिम तिथि 28 जुलाई 2020

पुरस्कार 32GB पेनड्राइव

फोटो infostudionewsup@gmail.com पर मेल करें।

निर्णायक दल

वरिष्ठ छायाकार
अनिल रिसाल सिंह

आर्ट्स कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल
जयकृष्ण अग्रवाल

लॉक डाउन कैमरे की नज़र में

HELPING HAND

The Times of India

Pic : VSUNIL

Hindustan

Pic : RITESH YADAV (ANSHU)

घर जाने के लिये इंतजार करते मजदूर

Hindustan

Pic : SURAJ KUMAR

Dainik Swantra Chetna

Pic : ASHFAQ AHMAD

लॉकडाउन में अपने घर को जाती ये मासूम बच्ची

Photoplayer

Pic : MONISH ATEEQ KHAN

STUDIO NEWS
लखनऊ, शनिवार, 6 जून 2020 से 5 जुलाई 2020

एक तस्वीर आपको भूतकाल के साथ-साथ भविष्य से भी रूबरू करती है। -- सैली मान

सपने जो पीछे रह गये

Camera Care

Pic : SAHIL SIDDIQUI

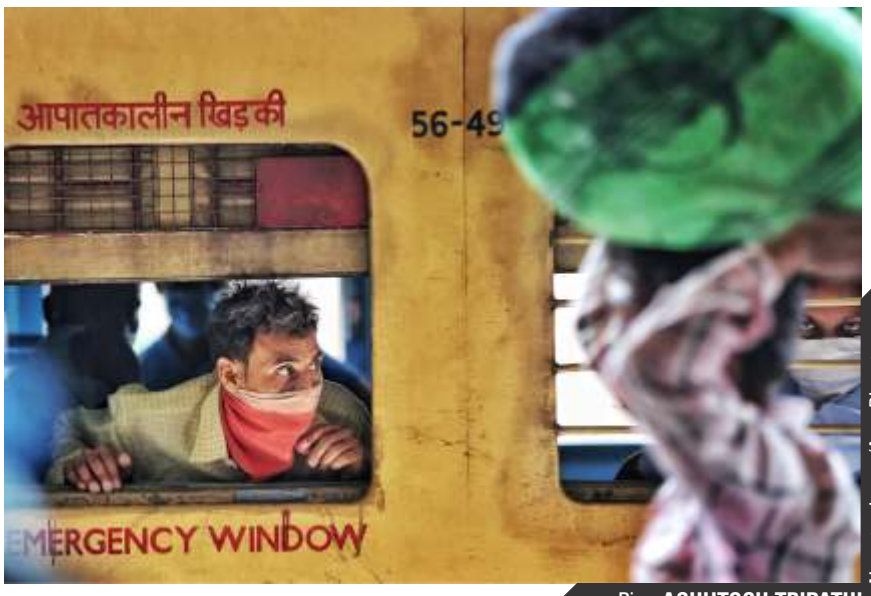

Newstrack.com/ApnaBharat

Pic : ASHUTOSH TRIPATHI

लॉकडाउन में शराब की दुकान क्या खुली, लड़कियाँ भी लाइन में लग गई

Photoplayer

Pic : DANISH ATEEQ KHAN

Hindustan Times

Pic : DEEPAK GUPTA

मास्क

Prem Ki Halchal

Pic : UTKARSH KUMAR

चाइल्ड फोटोग्राफी

अभिनीत सेठ

बच्चों की मासूमियत हर किसी को अपनी ओर बहुत आकर्षित करती है। हर इंसान को अपने अंदर के बच्चे को हमेशा जिन्दा रखना चाहिए। जितना मुश्किल होता है बच्चों को संभालना उतना ही मुश्किल होता है बच्चों की फोटोज क्लिक करना। आप बच्चों को अपने हिसाब से नियंत्रित नहीं कर सकते, आपको उनके हिसाब से अपने आपको ढालना पड़ता है। बच्चों की फोटो क्लिक करने में कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना पड़ता है : -

1. अच्छी लोकेशन

बच्चों की फोटोज क्लिक करने के लिए अच्छी लोकेशन का होना बहु ही महत्वपूर्ण होता है। ये तो स्वाभाविक है कि बच्चा ही आपका सबजेक्ट है पर प्रभावशाली बैकग्राउंड जो आपके सबजेक्ट को सपोर्ट करे और फाइनल रिजल्ट को और प्रभावशाली बना दे, ऐसी लोकेशन का होना बहुत जरूरी होता है। सबसे महत्वपूर्ण होता है बैकग्राउंड का "कलर"। बैकग्राउंड में कलर अगर ग्रीन या यलो हो तो फोटो में काफी आकर्षण आ

जाता है। ऐसी लोकेशन के लिए कपड़ों का चुनाव भी बहुत इम्पोर्टेंट हो जाता है। अगर बैकग्राउंड में कलर ग्रीन या यलो हो तो कपड़ो का रंग भी उसी हिसाब से कंट्रास्ट में होना चाहिए जैसे पिंक या रेड। और अगर आपकी लोकेशन इनडोर हो तो घर का कोई भी कोना जहाँ सनलाईट

आती हो उसको चुनना चाहिए। वैसे सबसे अच्छा चुनाव खिड़की या बालकनी होती है। खिड़की और बालकानी दोनों ही जगह आपको भरपूर सनलाईट मिलती है। खास तौर से जो सनलाईट खिड़की से आती है उसको आप परदे के माध्यम से हल्का भी कर सकते हैं ताकि सबजेक्ट बर्न ना हो।

फोटोग्राफी में लाईट का सबसे महत्वपूर्ण रोल होता है। चाइल्ड फोटोग्राफी में कुछ खास तरह की नैचुरल लाईटस का अपना अलग ही योगदान होता है।

2. सॉफ्ट लाइट

जैसे पोर्ट्रेट फोटोग्राफी में शुरू से सॉफ्ट लाइट का महत्वपूर्ण रोल रहा है, उसी तरह से बच्चों की फोटोज में भी सॉफ्ट लाइट का सबसे ज्यादा उपयोग होता है। बच्चे खुद बहुत सॉफ्ट-सॉफ्ट होते हैं तो आपको उनकी पोर्ट्रेट के लिए सॉफ्ट लाइट का होना भी बहुत जरूरी होता है। लाइट को सॉफ्ट करने के लिए आपको ये देखना है कि आपके सबजेक्ट पे लाइट डायरेक्ट ना पड़े, कहीं ना कहीं से रिफ्लेक्ट होके आये या फिर वो अम्बिएंस लाइट हो। आप चाहे तो रिफ्लेक्टर या डिफ्युजर का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

3. बैक लाइट और साइड लाइट

चाइल्ड फोटोग्राफी में फोटोग्राफ को सिनेमैटिक लुक देने में बैक लाइट और साइड लाइट का बहुत बड़ा रोल होता है। अगर आपके सबजेक्ट पे बैक लाइट या साइड लाइट पड़ रही हो तो तस्वीर एकदम खिल के बहार आती है।

4. सही वक्त का चयन

बच्चो की फोटोज खींचने का सबसे सही वक्त ढलती शाम का होता है। बच्चों को आप सुबह-सुबह उठा के लोकेशन पे नहीं ले जा सकते हैं इसलिए शूट का टाइम आपको दोंपहर 2 बजे से लेकर शाम ढलने तक का रखना चाहिए। चूँकि बच्चों से आप अपने मन मुताबिक पोजेज नहीं बनवा सकते तो आपको ही उनके आगे पीछे ही भागना पड़ता है और सही मोमेंट को कैप्चर करना पड़ता है। सही समय, सही बैकग्राउण्ड, सही लाइट के साथ आपको सही मोमेंट मिल जाए ये अपने आप में एक कैल्कुलेटिव टास्क होता है।

5. प्रॉप्स क्यों और कैसे?

मेरा अपना तरीका जो है - फोटोज को खींचने का वो बहुत ही नैचुरल और कैंडिड है। मैं मानता हूँ कि आप जितना ही कैंडिड क्लिक करते हैं आपके सब्जेक्ट के एक्सप्रेसंस उतने ही नैचुरल आते हैं। यही बात लागू होती हैं प्रॉप्स के मामले में। अगर आप ये सोचते हैं कि आपको बहुत से प्रॉप्स को बैकग्राउण्ड या फोरग्राउण्ड में यूज करना चाहिए तो आप गलत हैं। याद रखिये आपका सबजेक्ट बच्चा है प्रॉप्स नहीं। मेरे हिसाब से आप जितना कम से कम प्रॉप्स का इस्तेमाल करेंगे फोटो उतनी ही अच्छी निकल के आएगी। सबसे अच्छा प्रॉप बच्चे का अपना खुद का कोई एक खिलौना होना चाहिए जो उसको बेहद पसंद हो। पानी का बुलबुला भी बहुत अच्छा प्रॉप का काम करता है और फोटोज में सिनेमैटिक लुक लाता है। पर ये सब बातें सिर्फ बड़े बच्चों में लागू होती हैं - जो बच्चे चल सकते हैं या दौड़ सकते हैं। जब बच्चा कुछ दिन या कुछ महीने का होता है या जो सिर्फ लेट सकता है या बैठ सकता हैं तब आपको वाकई प्रॉप्स का इस्तेमाल करना पड़ता है - बैकग्राउण्ड इस्टैब्लिश करने के लिए। यहाँ पे भी बैकग्राउण्ड के हिसाब से प्रॉप्स का कलर सेलेक्ट करना चाहिए। बच्चों के लिए उनके सॉफ्ट टॉयज, टॉयज, फूल, डालियाँ, केक आदि प्रॉप्स में प्रयोग हो सकते हैं।

6. नैचुरल पोजेज और इमोशंस

बच्चों से पोजेज बनवाना सबसे मुश्किल काम होता है। आप उनको बहुत ज्यादा नहीं समझा सकते हैं कि आप उनसे क्या करवाना चाहते हैं। इसीलिए सबसे अच्छा तरीक होता हैं कि आप बच्चे को उसी की किसी एक्टिविटी में इन्वॉल्व कर दें, और जब वो इन्वॉल्व हो तब आप उसके नैचुरल एक्सप्रेसंस कैप्चर करने की कोशिश करें।

सबसे अच्छा तरीका हैं आप बच्चे से कहें कि वो "रन" करे - जब वो आपकी तरफ रन करता हुआ आएगा तो आपको काफी अच्छे नैचुरल एक्सप्रेसंस मिल जाएँगे। दूसरा आप बच्चे के माँ-बाप से कह सकते हैं कि बच्चे के साथ पूरी तरह से इन्वॉल्व हो जाएँ, खेलें, कूदे आदि। इससे बच्चे के साथ-साथ माता-पिता की भी फोटोज आ जाती है।

RNI No. : UPHIN/2017/74695, **स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक** - सुरेंदर सिंह बिष्ट, शॉप नं. 3, शान्ति मार्केट, लक्ष्मणपुरी गेट, फैजाबाद रोड, इन्दिरा नगर, लखनऊ - 226016 द्वारा ज्ञान प्रिंटर्स, 207, 208 लेखराज मार्केट-2, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016 से प्रकाशित।
सम्पादक - सुरेंदर सिंह बिष्ट, फोन - 0522-4108575, ई-मेलः infostudionewsup@gmail.com, वेबसाइट : www.studionews.co.in